॥ ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः॥

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष : 11 अंक : 122 जोधपुर : हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका जुलाई– 2018 30/–प्रति

'सद्गुरु देव की असीम कृपा से,
'गुरु पूर्णिमा महोत्सव'
जोधपुर आश्रम में 27 जुलाई 2018
को सुबह 10.30 बजे मनाया जायेगा।

File Photo

www.the-comforter.org

ऑनलाइन शक्तिपात-दीक्षा प्राप्त करने के लिए लॉग-ऑन करें-
Web : www.the-comforter.org

मंत्र दीक्षा के लिये मोबाइल नम्बर डायल करें -
07533006009

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर करणी पैलेस, वैशाली नगर, जयपुर में ध्यान सिद्धयोग शिविर आयोजित। (21 जून 2018)

"ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः"

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

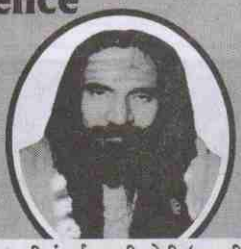

बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन)

वर्ष : 11 अंक : 122 जोधपुरः- हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका जुलाई – 2018

वार्षिक 300/- द्विवार्षिक : 600/- आजीवन (11 वर्ष) : 3000/- मूल्य 30/-

संस्थापक एवं संरक्षक :
पूज्य सद्गुरुदेव
श्री रामलालजी सियाग
(ब्रह्मलीन)

सम्पादक :
रामूराम चौधरी

कार्यालय :
Spiritual Science
पत्रिका
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र

पो.बॉक्स नं.41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत

9784742595

E-mail :
spiritualscienceavsk@gmail.com

Ashram :
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Near Hotel Leriya,
Chopasani, JODHPUR (Raj.)
INDIA - 342 003
☎ +91 0291-2753699
Mob. : +91 9784742595
e-mail :
avsk@the-comforter.org
Website :
www.the-comforter.org

अनुक्रम

ज्ञान प्राप्ति की कीमत (मूल्य) ?.....4
जीवन में सदगुरुदेव की भूमिका (सम्पादकीय).....5
दुःख-सुख की अनुभूति ही जीवन है.....6-7
अन्तर्मुखी अराधना.....8
Religious Revolution in the World.....9
हृदय मंथन.....10
योगियों की आत्मकथा.....11
योग के बारे में.....12
योग के आधार.....13
मेरे गुरुदेव.....14
सत्य की महिमा (कहानी).....15-17
हार्दिक प्रार्थना.....18
चित्र पृष्ठ.....19-22
अनुभूतियाँ तथा रोगों व नशों से मुक्ति.....23-24
सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से.....25
मनुष्य और विकास.....26
ध्यान.....27
साधक और साधना.....28
अनुभाव-प्रधान युग का आगमन.....29
चित्त सदा प्रसन्न और शांत हो.....30
सद्गुरु के दिव्य शब्द.....31
विरोधी शक्तियों का प्रतिरोध.....32
सघन आराधना.....33
અદ્ભૂત સિદ્ધયોગ.....34
सिद्धयोग.....35
संस्था के उद्देश्य.....36
सम्पादकीय शेष पृष्ठ.....37
ध्यान विधि.....38

www.the-comforter.org

ज्ञान प्राप्ति की कीमत (मूल्य)?

इसकी कीमत मात्र गुरु के चरणों में पूर्ण समर्पण है।

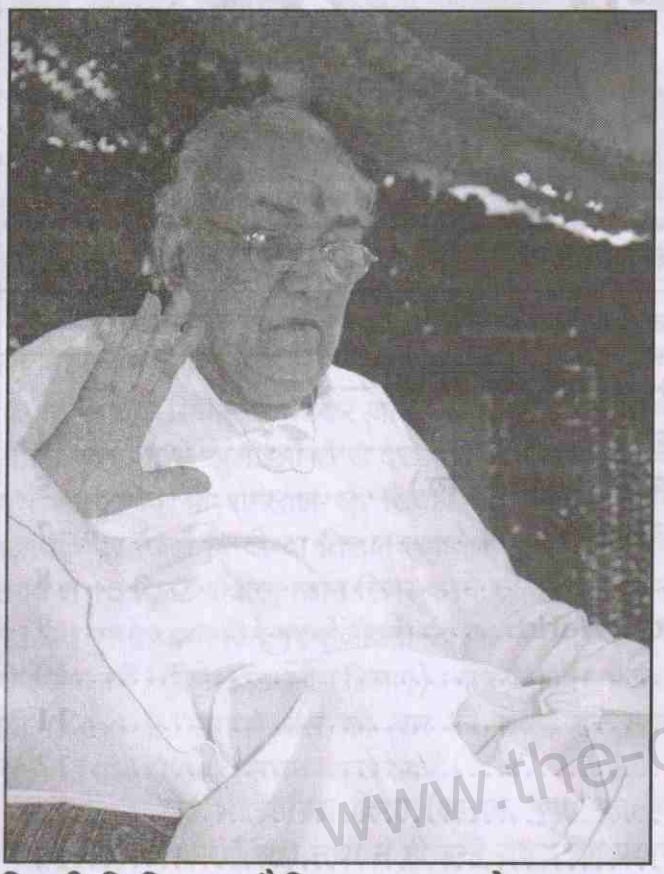

मेरी मान्यता है कि भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान इस ज्ञान (सिद्धयोग) से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्त्ता को करवा देगी। इस प्रकार विश्व के मानव की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

मैं संसार में इस ज्ञान को बाँटने के लिए ही मेरे गुरु के आदेश से निकला हूँ। यह ज्ञान मात्र गुरु कृपा से ही प्राप्त होना संभव है। **इसकी कीमत मात्र गुरु के चरणों में पूर्ण समर्पण है।** और किसी विधि या बौद्धिक प्रयास के यह ज्ञान प्राप्त होना असंभव है। इस समय मानव, बुद्धि को बहुत बड़ी मानता है। परन्तु इस युग का मानव भूल जाता है, कि 'मन' बुद्धि को दिन में कई सब्जबाग दिखाकर चकमा दे जाता है।

भारतीय योगदर्शन में मन को स्थिर करके ही यह ज्ञान प्राप्त करने की क्रियात्मक विधि बताई गई है। पातंजलि ऋषि ने जब योग दर्शन लिखना आरंभ किया तो योग की व्याख्या करते हुए, दूसरे सूत्र में स्पष्ट शब्दों में कहा है-'**चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है।**' और यह कार्य मनुष्य स्वयं नहीं कर सकता। इसमें चेतन गुरु की नितान्त आवश्यकता होती है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

मुख्यालय:- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342003
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

जीवन में सद्गुरुदेव की भूमिका

गुरु-शिष्य मिलन के पावन पर्व, गुरु पूर्णिमा महोत्सव (27 जुलाई,2018, सुबह-10.30 बजे) के शुभ अवसर पर आप समस्त साधकों व पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएँ। यह पावन पर्व सद्गुरुदेव की असीम कृपा से जोधपुर आश्रम में मनाया जाएगा। इस पावन वेला में आप समस्त जिज्ञासुगण सादर आमंत्रित हैं।

'श्री गुरुकृपा ही केवलम्'

गुरु पूर्णिमा महोत्सव गुरु-शिष्य मिलन का सर्वोत्तम व पावन

अमृतमयी वेला की शुभ घड़ी का दिन है। इस दिन महाभारत ग्रंथ के रचयिता श्री वेदव्यासजी ने अपने शिष्यों को आध्यात्मिक ज्ञान देने के लिए दीक्षा दी थी। उस दिन के बाद यह पर्व बड़ी श्रद्धा व समर्पण से हर वर्ष मनाया जाता है।

शिष्य अपने समर्थ सद्गुरु देव की पूजा अर्चना करता है तथा समर्थ सद्गुरु प्रसन्न होकर आशीर्वाद देते हैं। भारतीय संस्कृति में अनादिकाल से सद्गुरु के महत्त्व की परम्परा रही है। गुरु के बिना मनुष्य जीवन अपूर्ण रह जाता है। **मनुष्य जीवन के असली स्वरूप का ज्ञान सद्गुरु करुणा से ही प्राप्त होता है।**

अनेक ग्रन्थों, पुराणों व शास्त्रों में गुरु महिमा का उल्लेख है। गुरु महिमा का बखान यदि अनन्तकाल तक करते रहें। तब भी पूर्ण नहीं होता है। इस संबंध में संत कबीरदासजी ने कहा है -

सात समंदर मसि करौं,
लेखानी सब बनराय।
सब धरती केरा कागद करौं,
तो भी गुरु गुण लिख्या न जाय।।

इसी प्रकार गुरु-गीता में गुरु महिमा का बखान है-

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु
गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म,
तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।
ध्यानमूलं गुरोमूर्ति,
पूजा मूलं गुरोः पदं।
मंत्र मूलं गुरोर्वाक्यं,
मोक्ष मूलं गुरो कृपा।

गुरु ब्रह्मा है, गुरु विष्णु है, गुरु भगवान् महेश है, गुरु प्रत्यक्ष रूप में परमब्रह्म है। उस गुरु को प्रणाम है। ध्यान का मूल गुरु की मूर्ति है, पूजा का मूल गुरु के चरण है, मंत्र का मूल गुरु मुखार्विन्द से बोला गया वाक्य है और मोक्ष का मूल गुरु की कृपा है।

आध्यात्मिक मार्ग में गुरु का स्थान सबसे ऊँचा है। गुरु, निर्गुण निराकार ईश्वर का, सगुण साकार रूप है। उनकी असीम कृपा से शिष्य की तामसिक वृत्तियाँ और खानपान स्वतः छूट जाते हैं। मनुष्य दानवी प्रकृति से देवी प्रकृति में बदल जाता है। अज्ञान में फंसे लोगों के उत्थान हेतु, ईश्वर मानव देह धारण कर, गुरु रूप में इस धरती पर अवतरित होते हैं। 'गुरु' सिद्धयोग का मूलभूत आधार स्तम्भ है। प्रत्येक वस्तु 'गुरु' तत्त्व के इर्द-गिर्द चक्रवत घूमती है। गुरु, कामधेनू व कल्पवृक्ष ही नहीं है बल्कि इनको भी आशीर्वाद देने वाले **सर्वोत्तम दाता है।** जिस पर गुरु कृपा होती है, वह नर से नारायण हो जाता है।

गुरु, मनुष्य को नया जन्म (द्विज) देता है। आनन्द के बिना आध्यात्मिक पथ निष्फल और चलने में दुःसह होता है, किन्तु वह आनन्द जो गुरु कृपा द्वारा जाग्रत कर दिया जाता है, वह आध्यात्मिक पथ पर आने वाले सभी व्यवधानों को हटा देता है, और हाड़-मांसमय शरीर को प्रकाशमय (दिव्य रूप) शरीर में परिवर्तित कर देता है। गुरुदेव, दिव्य शक्ति को शिष्य के भीतर से जाग्रत कर देते हैं।

ईश्वर के पंचकृत्य है-**सृष्टि, स्थिति, लय, तिरोधान और अनुग्रह।** पाँचवा कार्य **'अनुग्रह'** जिससे मानव को अपनी व विश्व की यथार्थता का बोध होता है। यह नेक और पवित्र कार्य सद्गुरु करुणा से ही सम्पन्न होता है अर्थात् गुरु का वर्णन **'अनुग्रहकर्ता'** के रूप में किया गया है। शिष्य में जाग्रत हुई शक्ति पर गुरु का पूर्ण प्रभुत्व होता है, जिससे वह उसके वेग को अनुशासित व नियन्त्रित करते हैं। ऐसे सद्गुरु का शरीर पूर्ण शक्ति पूरक होता है। वास्तव में ऐसे गुरु, साक्षात् शक्ति के ही मूर्त रूप बन जाते हैं। यहाँ तक कि वह जो कपड़े पहनते हैं, आसन जिस पर बैठते हैं, वे भी शक्ति पूरित हो जाते हैं और केवल स्पर्श मात्र

शेष पृष्ठ 37 पर....

दुःख-सुख की अनुभूति ही जीवन है।

संसार का हर परिवर्तन पूर्व निर्धारित है, इसी प्रकार प्रत्येक प्राणी का जन्म से मृत्यु पर्यन्त सारा जीवन पूर्व निर्धारित व्यवस्था द्वारा संचालित होता है। वह परम सत्ता जीव को भरमाती हुई अपनी इच्छा से चलाती हैं। भगवान् श्री कृष्ण ने गीता में इस सन्दर्भ में स्पष्ट कहा है :-

ईश्वरः सर्वभूतानां
हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि
यन्त्रारूढानि मायया।।

इस सम्बन्ध में भगवान् कृष्ण ने गीता में स्पष्ट रूप से संसार की व्याख्या करते हुए कहा है :-

कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो,
लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः।
ऋतेऽपि तां न भविष्यन्ति सर्वे,
येऽवस्थितः प्रत्यनीकेषुयोधाः।।
तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व,
जित्वा शत्रून्युङ्क्ष्व
राज्यं समृद्धम्।
मयैवैते निहताः पूर्वमेव,
निमित्तमात्र भव सव्यसाचिन्।।
द्रोणं च भीष्मं च जयद्रथं चे,
कर्णं तथान्यानपि योधवीरान्।
मयाहतांस्त्वंजहि मा व्यथिष्ठा,
युध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान्।।

गीता के उपयुक्त श्लोकों से स्पष्ट हो जाता है कि उस परम सत्ता की इच्छा के बिना संसार में पत्ता भी नहीं हिल सकता है। मुझे आराधना के दौरान ऐसी असंख्य घटनाओं का पूर्वाभास हुआ और सभी भौतिक रूप से सत्यापित हुई। बहुत सी ऐसी घटनाएँ जो अपने तक मेरे जीवन में घटी नहीं, मेरा ध्यान अधिक आकर्षित किया। मुझे किसी भी घटना के घटने का निश्चित समय नहीं बताया जाता था। केवल आगे घटने वाली घटना का सही दृश्य टेलीविजन की तरह दिखा दिया जाता है। ऐसी घटनाएँ, पूर्व जन्म तथा इस जन्म, दोनों से सम्बन्धित होती थी। जिज्ञासावश मैंने उन घटनाओं का समय जानने के लिए ध्यान को केन्द्रित करके आराधना प्रारम्भ कर दी।

चन्द दिनों में उत्तर मिला कि जो होना है, पूर्व निश्चित है उसके लिए समय और शक्ति का दुरुपयोग क्यों कर रहे हो? **सुख-दुख की अनुभूति ही तो जीवन है।** जीवन में होने वाली सभी बातें स्पष्ट मालूम होने पर सुख-दुःख की अनुभूति खात्म हो जायेगी। इस प्रकार जीवन पूर्णरूप से नीरस हो जायेगा। इस प्रकार उस गुलाबी पर्दे की स्थिति (हटने की) हो जायेगी। अतः यह निरर्थक प्रयास क्यों कर रहे हो। अतः मैंने निश्चित समय मालूम करने का प्रयास बन्द कर दिया। संसार एक स्वप्न हैं। दुःख-सुख की अनुभूतियाँ मात्र त्रिगुणमयी माया का खेल हैं। इस संसार में विचरण करते हुए कोई भी जीव इसके प्रभाव से वंचित नहीं रह सकता।

ईश्वर की इस माया से कोई भी प्राणी बच नहीं सकता। परन्तु जो जीव संत सद्गुरु की शरण में चला जाता है, उसके बन्धन धीरे-धीरे कटने लगते हैं। माया की पकड़ से वह जीव एक ही जन्म में छुटकारा पा कर **आज्ञाचक्र** को भेद कर **सत्तलोक** में अनायास ही प्रवेश कर जाता है। इस तरह के जीव को संसार के दुःख-सुख अधिक प्रभावित नहीं कर सकते हैं। क्योंकि वह जीव माया के क्षेत्र को लांघ जाता है। इसलिए माया भी उसकी चेरी बनकर उसको रोकने के स्थान पर ऊपर की तरफ आरोहण करने में मदद करती हैं। संत सद्गुरु द्वारा प्राप्त किए हुए प्रकाश प्रद शब्द के सहारे वह जीव निर्विघ्न, निरन्तर उस परमसत्ता के नजदीक जाता रहता है। इस प्रकार से संसार के असंख्य जीव, जन्म-मरण के चक्र से छुटकारा पा जाते हैं।

श्री अरविन्द ने स्पष्ट कहा है "एक सम्पूर्ण आध्यात्मिक जीवन में हर वस्तु के लिए अवकाश होता है। अतः इस युग के धर्म गुरुओं द्वारा खींची गई काल्पनिक लक्ष्मण रेखा एक भ्रम है, स्वर्ग-नरक, पाप-पुण्य, सही-गलत की व्याख्या संसार के जीवों को भ्रमित कर रही है।

गीता का सही अर्थ अर्जुन से बढ़कर किसी को मालूम नहीं हो सका। भगवान् श्री कृष्ण ने अपने मुख से पूर्ण भेद बताते हुए, अपनी दिव्य दृष्टि देकर अपने विराट स्वरूट का दर्शन कराते हुए, संसार का पूर्ण और सच्चा ज्ञान अर्जुन को बता दिया था।

गीता का उपदेश समाप्त होने पर अर्जुन ने जो कुछ किया, वही गीता का सही अर्थ है। उसमें त्याग, तपस्या, दान, धर्म, पाप-पुण्य, आदि आधुनिक गुरुओं का कौनसा उपदेश सम्मिलित हैं। अर्जुन ने जो कुछ किया, संसार के धर्म गुरु इस समय गीता से ठीक उल्टा कार्य करवा रहे हैं।

गीता रूपी ज्ञान की समाप्ति पर भगवान् ने अर्जुन से पूछा :-

कच्चिदेतच्छ्रुतं
पार्थ त्वयैकाग्रेण चेतसां।

www.the-comforter.org

कच्चिदज्ञानसंमोहः
प्रनष्टस्ते धनंजय।।

इस प्रकार गीता रूपी ज्ञान देने के बाद भगवान् ने अर्जुन से पूछा। इस प्रकार पूछे जाने पर अर्जुन ने स्पष्ट कहा :-

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा
त्वत्प्रसादान्मयाच्युत।
स्थितो स्मि गतसंदेहः
करिष्ये वचनं तव।।

इस प्रकार भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया गीतारूपी ज्ञान भी इस युग के प्रभाव से नहीं बच सका। इस युग के धर्म गुरु गीता की व्याख्या इस प्रकार तोड़ मरोड़कर कर रहे हैं कि उसका स्वरूप ठीक उल्टा बना दिया। इसमें हम किसी को दोषी नहीं बना सकते।

क्योंकि भगवान् श्रीकृष्ण ने स्पष्ट कहा है कि मैं संसार के जीवों को भरमाता हुआ अपनी इच्छा के अनुसार चला रहा हूँ। अन्धेरे के बिना उजाले की कीमत मालूम नहीं हो सकती। दुःख के बिना सुख के आनन्द का आभास नहीं हो सकता।

इस समय संसार में फैला घोर अन्धकार स्पष्ट बता रहा है कि उस परम सत्ता का प्रकाश संसार में प्रकट होने ही वाला है। इस सम्बन्ध में महर्षि अरविन्द ने स्पष्ट कहा हैः- "वह ज्ञान जिसे ऋषियों ने पाया था, फिर से आ रहा है, उसे हमें सारे संसार को देना होगा।" इस प्रकार भारत को संसार में शान्ति स्थापित करने और सनातन धर्म का प्रचार-प्रसार करने हेतु अवश्य खड़ा होना पड़ेगा।

मेरी स्वयं की प्रत्यक्षानुभूतियों के अनुसार इस सदी के अन्त तक सारा संसार भारत को धर्म गुरु स्वीकार कर लेगा।

समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

24 .3. 1988

"नाम खुमारी" के सम्बन्ध में गीता क्या कहती है?

समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

हमारे कई संतों ने ईश्वर के नाम की महिमा की है। अपनी-अपनी अनुभूति के अनुसार सभी ने उस परम सत्ता के नाम की महिमा का गुणगान किया है। संत सद्गुरु नानक देव जी ने इस सम्बन्ध में कहा है :-

"भांग धतूरा नानका ,
उतर जाय परभात।
नाम खुमारी नानका,
चढी रहे दिन रात।।

संत सत्गुरु कबीर ने भी नाम की महिमा करते हुए कहा है :-

"नाम अमल उतरै न भाई।
और अमल छिन-छिन चिढ उतरै,
नाम अमल दिन बढै, सवायो।"

इस सम्बन्ध में यीशु के परम शिष्य यहून्ना ने भी इस सम्बन्ध में स्पष्ट कहा है :- **"यह एक आंतरिक आनं द है, जो सभी सच्चे विश्वासियों के हृदय में बना रहता है, सांसारिक आनन्द के समान यह आता-जाता नहीं हैं।** उसका आनन्द पूर्ण है, वह हमारे हृदयों के कटोरों को आनन्द से तब तक भरता है, जब तक उमड़ न जाय।"

भगवान् श्रीकृष्ण ने भी गीता के 5वें अध्याय के 21 वें श्लोक में इस **"अक्षय आनन्द"** के बारे में कहा है :-

बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा
विन्दत्यात्मनि यत्सुखम्।
स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा
सुखमक्षयमश्नुते।। 21।।

"बाहर के विषयों में आसक्ति रहित अन्तःकरण वाला पुरुष अन्तःकरण में जो भगवत् ध्यान जनित आनन्द है, उसको प्राप्त होता है। वह पुरुष सच्चिदानन्द घन परब्रह्म परमात्मारूप योग में एकीभाव से स्थित हुआ, **अक्षय आनन्द** को अनुभव करता है।"

परन्तु इस युग का मानव इसे असम्भव मानता है। युग के गुणधर्म ने संसार में इतना घोर अन्धकार व्याप्त कर रखा है कि सब की बुद्धि भ्रमित हो रही है। अपने ही धर्म के संतों की बात पर लोगों को विश्वास नहीं हो रहा है। मैं जब नाम खुमारी की बात कहता हूँ तो लोगों को विश्वास नहीं होता है।

मैं देखा रहा हूँ कि मेरे साथ आध्यात्मिक सत्संग करने वाले लोगों को इस **अक्षय आनन्द** की अनुभूति चन्द दिनों में ही होने लगती है। सांसारिक सभी नशों का आनन्द इसके सामने तुच्छ है।

अतः सभी प्रकार के नशों से हमेशा-हमेशा के लिए छुटकारा मिल रहा है। यह एक प्रत्यक्ष सत्य है।

28.04.1988

सद्गुरु कृपा से

अन्तर्मुखी आराधना

''हमारे सभी ऋषि कह गये हैं कि उस परमसत्ता का निवास अपने शरीर के भीतर ही है। हमारे सभी धार्मिक ग्रंथ भी यही बात करते हैं। अतः अन्तर्मुखी आराधना के बिना काम बन नहीं सकता। यह आराधना भी कोई आसान कार्य नहीं है। यह परमसत्ता ऐसे भयंकर चक्रव्यूह को पार करने पर मिलती है जिसे पार करना अकेले जीव के लिए बहुत ही कठिन है।

इस रास्ते पर चलने के लिए किसी भेदी संत सद्गुरु की आवश्यकता होती है। भगवान् राम और कृष्ण को भी गुरु धारण करना पड़ा था। इसके अलावा सभी संत गुरु की महिमा का गुणगान कर गये हैं। अगम लोक का भेद और रास्ता, केवल गुरु कृपा से प्राप्त हो सकता है और कोई रास्ता ही नहीं है।''

समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग
संदर्भ-सिद्धयोग पृष्ठ-87

Religious Revolution in the World

Guru Siyag has proved in a number of cases that the practical application of yoga can indeed heal and even cure chronic ailments such as arthritis and diabetes, and terminal diseases such as cancer and HIV/ AIDS. Countless patients, practically given up for dead by doctors, have not only survived and regained good health but are also leading normal lives after seeking Guru Siyag's blessings as a last resort and getting initiated into Siddha Yoga. Siddha Yoga takes over and succeeds where modern medical science reaches its final limitations in finding lasting relief or cure for a disease.

Our body is the medium through which enlightenment can be achieved. Yogic philosophy therefore emphasizes the need for the practitioner to be completely healthy if he / she wants to progress on the path of spirituality. This can be explained with an example from everyday life: We need to travel from point A to point B. If the vehicle is in optimum working condition, it will get us to point B not only faster but also more efficiently than if the vehicle was in a bad condition. In short, to progress spiritually one first needs to be completely healthy. Regular practice of Siddha Yoga does just that.

What are the benefits of Siddha Yoga?

Siddha Yoga heals, cures or frees the body from any physical illness – AIDS, various forms of cancer, diabetes, arthritis, asthma and even genetic diseases like hemophilia.

It frees the practitioner from any kind of addiction such as drugs, alcohol, cigarettes or an unnatural dependency on any substance such as food, and even feelings of power and success. The practitioner is freed from the addiction without experiencing any withdrawal symptoms.

Corrects any mental disharmony brought on by psychological or emotional disorders.

Siddha Yoga relieves stress caused by work, family problems, education etc.

Freedom from physical diseases

Practice of Siddha Yoga awakens the Kundalini. Once awakened, the Kundalini brings about yogic kriyas which in turn free the body from all kinds of diseases.

Only that part of the body experiences kriyas which is diseased. For instance, if you are experiencing problems in the shoulder or neck you may undergo yogic kriyas in that area. Once the Kundalini fortifies and tones up that area, kriyas cease to take place.

In the case of a disease such as AIDS, which attacks the entire body, the patient may experience internal kriyas such as sensations of heat, electricity or tingling.

Regular practice of Siddha Yoga strengthens the immune system.

The Kundalini acts as a protective shield of the immune system and wards off the onslaught or recurrence of any disease.

❖❖❖

Count. to Next Edition

गतांक से आगे...

"हृदय मंथन"

मैं देख रहा था कि महाराजश्री कितना क्रमबद्ध तथा सूक्ष्म विचार करते हैं। गुरु बनने की लालसा शिष्यों में प्रायः होती है। यह लालसा न उन्हें गुरु ही बना पाती है, न शिष्य ही रहने देती है। गुरु-वासना भी आसक्ति का ही एक रूप है, जो साधक को भ्रमाती, नचाती, भगाती हुई, तमोगुण के गहरे गर्त्त में गिरा देती है। महाराजश्री ने जब यह कहा कि आश्रम की इच्छा करनी थी तो घर ही क्यों छोड़ा था तो बात सीधी हृदय में उतर गई। यदि अपने बच्चों का मोह छोड़कर जगत् त्याग किया था तो शिष्यों के मोह में फँस जाना था। फिर भला बच्चों ने क्या पाप किया था ! शिष्यों में मोह नहीं, कल्याण की भावना होनी चाहिए।

महाराजश्री कभी लोभ में नहीं पड़े, न ही उन्होंने कभी आश्रम के खर्च की चिन्ता की। दीक्षा भी वह बहुत कम देते थे। ठीक भी है, दीक्षा को आय का माध्यम बना लेना, आध्यात्मिक दृष्टि से उचित भी नहीं। इससे शिष्य के प्रति कल्याण का भाव गौण हो जाता है। कुछ लोगों का ऐसा सुझाव था कि आश्रम के बाहर दो चार दुकानें बना दी जाएँ, तथा उससे प्राप्त होने वाली आय से आश्रम खर्च चलता रहे। देखने में सुझाव अच्छा भी था। सुनकर मेरे मन को भी भा गया, अभी अन्जान जो था।

महाराजश्री तक बात पहुँची तो उन्होंने कहा, "यह हमारा काम नहीं है। साधु का काम व्यापार पर नहीं, आकाशी वृत्ति (भिक्षा, जैसा भगवान् दे) पर चलता है। व्यापार ही करना होता तो साधु बनने की क्या जरूरत थी? संन्यास का अर्थ पारिवारिक तथा सामाजिक रूप से एक प्रकार की मृत्यु है। इस बात को ध्यान में रखकर ही आप सुझाव दें।"

"यदि आपको व्यवस्था करना ही है तो निरन्तर साधन-भजन की करिए, सत्संग तथा कीर्त्तन की करिए, आपस में प्रेम-सद्भावना की करिए। आर्थिक व्यवस्था करना किसी व्यापारिक संस्था या परिवार के लिए उचित है। जब तक आश्रम में साधन-भजन होता रहेगा, आश्रम पर कोई संकट नहीं। यदि साधन न हों तो आश्रम का बन्द हो जाना ही उचित है।

यदि साधन न हो तो आर्थिक ऑक्सीजन से आश्रम को जीवित रखने का प्रयत्न निरर्थक है। आश्रम हमारा नहीं, आपका नहीं, शंकर का है। शंकर का खजाना अखण्ड है। जब तक शंकर चाहेंगे, आश्रम चलेगा, जब नहीं चाहेंगे तो समाप्त हो जाएगा, फिर चाहे आप कैसी भी स्थिर व्यवस्था क्यों न कर लो। वैसे भी जगत् में कौन सी संस्था, समाज, देश, साम्राज्य ऐसा है जिसका कभी न कभी पतन न हुआ हो। यदि इतने पर भी आप दुकानें बनाना ही चाहते हैं तो शौक से बनाएँ और चलाइए आश्रम। पर फिर हमारा यहाँ कोई काम नहीं। हम कहीं भी जाकर रह सकते हैं।"

एक सज्जन ने प्रश्न किया, "आपने कहा कि संन्यास का अर्थ सामाजिक मृत्यु है, किन्तु समाज के साथ संबंध तो फिर भी बना रहता है।" इस पर महाराजश्री ने कहा, "पर यह संबंध सामाजिक नहीं वरन् आध्यात्मिक होता है। सामाजिक व्यवहार की दृष्टि से तो संन्यासी की मृत्यु हो जाती है।"

महाराजश्री की बात सुनकर सब चुप रह गए। कौन चाहेगा कि महाराजश्री चले जाएँ, इसलिए दुकानें बनाने का विचार त्याग दिया गया।

एक दिन महाराजश्री आश्रम में चहलकदमी कर रहे थे। चारों ओर युक्लिप्टिस के गगन चुम्बी वृक्ष सिर उठाए खड़े थे। आम, फालसा, नीम्बू, चीकू, सीताफल तथा नीम, पीपल आदि झाड़ शोभा पा रहे थे। गेंदा, गुलदावदी, गुलाब, चम्पा, जैनिया, आदि फूल खिले थे। आश्रम बड़ा मनमोहक लग रहा था। महाराजश्री चलते हुए रुककर बोले, "देखो ! इन वृक्षों, पौधों तथा बेलों के पास साधकों को समझाने के लिये बहुत कुछ है। मित्र-शत्रु का भाव मिटा कर वे एक समान सभी को शीतल छाया प्रदान करते हैं।

साधकों के लिए यह बात अनुकरणीय है। जो उन पर कुल्हाड़ी चलाता है, उसे भी छाया में बिठाते हैं। अपने अंग-अंग कटवाने के लिये प्रस्तुत कर देते हैं। कोई गिला नहीं, शिकवा नहीं। ऐसी सहनशीलता कि धूप, ठण्डक, वर्षा तथा तूफान सभी कुछ सहन करते हैं। स्वयं धूप में खड़े रहकर, यात्री को छाया में आराम की व्यवस्था करते हैं। खाने को फल देते हैं, स्वयं नहीं खाते। अपनी कमाई में उन्हें आसक्ति नहीं होती। न किसी की निंदा, न चुगली। मौन साधे जगत् की चहल-पहल के साक्षी बने रहते हैं। राह चलते को सुगन्ध से मन प्रसन्न कर देते हैं।

पुष्प स्वयं भी खिले रहते हैं तथा आने वालों का चेहरा भी खिला देते हैं। फल, फूल, पत्ते, छाया या लकड़ी जिस भी आशा से कोई आता है उसे वही दे देते हैं। धूप लगने से चाहे सूख जाएँ, किन्तु किसी से पानी नहीं माँगेंगे। अपनी जान सदा हथेली पर रखे रहते हैं।

संदर्भ-स्वामी शिवोमतीर्थ
'हृदय मंथन-1

क्रमशः अगले अंक में...

योगियों की आत्मकथा

-परमहंस श्री योगानंद

जब मैं इस वाक्पटु साधु से सविनय विदा ले रहा था, तब उन्होंने एक अतींद्रिय अनुभूति मुझे बताई:

''यहाँ से जाने के बाद तुम्हें आज एक असाधारण अनुभव होगा।''

मन्दिर के अहाते से बाहर निकल कर मैं निरुद्देश्य यूँ ही चलने लगा। मुड़कर दूसरे एक रास्ते पर बढ़ा ही था कि एक पुराने परिचित से भेंट हो गयी। ये महाशय उन महाभागों में से एक थे जिनकी संभाषण शक्ति समय की ओर कोई ध्यान न देते हुए अनंत काल का आलिंगन करती है।

''मैं तुम्हें जल्दी ही छोड़ दूँगा,'' उसने वचन दिया, ''यदि तुम जल्दी-जल्दी मुझे हमारे बिछुड़ने के बाद के वर्षों में क्या-क्या हुआ वह सब बता दो।''

''परस्पर विरोधी बातें ! अब तो मुझे जाना ही पड़ेगा।''परन्तु उसने मेरा हाथ पकड़ लिया और थोड़ा-थोड़ा करके मुझसे जानकारी लेने लगा। ये भूखे भेड़िये से कम नहीं है, मैंने कौतुक से मन ही मन सोचा; जितना अधिक, मैं बताता था उतना ही अधिक समाचार जानने की उसकी भूख बढ़ती जाती थी। मन ही मन, मैं जल्दी छुटकारा पाने का कोई उपाय करने की प्रार्थना, माँ काली से करने लगा।

अचानक वह मुझे छोड़कर जाने लगा। मैंने ठंडी साँस ली और उसे वाचालता का ज्वर फिर कहीं चढ़ न आये, इस भय से दुगुनी गति से चलने लगा। अपने पीछे द्रुतगति की पद्चाप सुनकर, मैंने अपनी गति और बढ़ा दी। मुड़कर पीछे देखने का साहस मुझसे नहीं हुआ। परन्तु एक छलाँग लगाकर वह मेरे साथ हो लिया और आनन्द से उसने मेरा कंधा पकड़ लिया।

''मैं तुम्हें गन्धबाबा के बारे में बताना तो भूल ही गया। वे उस सामने वाले मकान में रहते हैं।'' कुछ ही गज की दूरी पर स्थित एक मकान की ओर उसने इशारा किया। ''उनसे अवश्य मिलो; बड़े दिलचस्प आदमी हैं। तुम्हें कोई असाधारण अनुभव हो सकता है। अच्छा ! चलता हूँ,'' और वह सचमुच चला गया।

कालीघाट मन्दिर में लगभग इन्हीं शब्दों में साधु द्वारा की गयी भविष्यवाणी मेरे मस्तिष्क में कौंध उठी। कौतुहलवश मैं उस मकान के अन्दर गया तो मुझे एक प्रशस्त ढ़लान में ले जाया गया। वहाँ एक मोटे नारंगी रंग के गलीचे पर काफी लोग इधर-उधर बैठे हुए थे, जैसे साधारणत: भारत में बैठते हैं। एक आदरयुक्त फुसफुसाहट मेरे कानों से टकरायी:

''वहाँ जो चीते की खाल पर बैठे हैं, वही गन्धबाबा हैं। वे किसी गन्धहीन फूल में किसी भी फूल की प्राकृतिक सुगन्ध भर सकते हैं या किसी मुरझाये फूल को फिर से ताजा कर सकते हैं या किसी मनुष्य की त्वचा से मनोरम सुगन्ध निकलवा सकते हैं।''

मैंने सीधे उस संत की ओर देखा; उनकी दृष्टि भी उसी समय मुझ पर स्थिर हुई। वे कृष्णवर्ण और स्थूलकाय थे। उनके चेहरे पर दाढ़ी थी और आँखें बड़ी-बड़ी तथा तेजस्वी थी।

''बेटा ! तुम्हें देखकर मैं प्रसन्न हुआ। बोलो तुम्हें क्या चाहिये ? कोई सुगन्ध चाहिये ?''

'' किसलिये ?'' मुझे उनकी बातें बचकानी-सी लगीं।

''चमत्कारपूर्ण ढंग से सुगन्ध का आनन्द लेने के लिये।''

''सुगन्ध बनाने के लिये भगवान का उपयोग ?''

''तो उसमें क्या है ? भगवान वैसे भी सुगन्ध तो बनाते ही हैं।''

''जी हाँ ! परन्तु वे हर बार ताजा सुगन्ध लेने के लिये और लेने के बाद फेंक देने के लिये फूलों की कोमल पँखुड़ियों रूपी शीशियों का निर्माण करते हैं। क्या आप फूलों का निर्माण कर सकते हैं ?''

''हाँ ! परन्तु साधारणत: मैं सुगन्ध ही निकालता हूँ।''

''तब तो इत्र के कारखाने बंद हो जायेंगे।''

''मेरी ओर से उन्हें अपना धन्धा करते रहने की अनुमति है ! मेरा अपना उद्देश्य तो केवल ईश्वर की शक्ति दिखाना है।''

''महाराज ! क्या ईश्वर की शक्ति का प्रमाण देना आवश्यक है ? क्या वे सकल विश्व में सर्वत्र अपने चमत्कार नहीं कर रहे हैं ?''

❖❖❖

क्रमश: अगले अंक में...

गतांक से आगे....

योग के बारे में

-महर्षि श्री अरविन्द

मनुष्य ईश्वर की सर्वोच्च कृति है। इस शरीर रूपी सुन्दर ग्रन्थ को पढ़ने के लिए, अपने जीवन की असंख्य समस्याओं व कष्टों से मुक्ति पाने के लिए, भारतीय सिद्धयोग दर्शन को अंगीकार करना परमावश्यक है। **समर्थ सद्गुरुदेव सियाग** ने मानव मात्र के कल्याण के लिए सिद्धयोग दर्शन को मानव मात्र में मूर्तरूप देकर समझाया है। योग से मनुष्य को अपने निज स्वरूप का ज्ञान हो जाता है। इसी संबंध में महर्षि श्री अरविन्द ने अपनी पुस्तक-**'मानव से अतिमानव'** में विस्तार से समझाया है। साधकों के ज्ञान बोध के लिए ये शीर्षक यहाँ वर्णित किया जा रहा है।

अगर जगत् ब्रह्म का अपने ऊपर आरोपित दुःस्वप्न होता तो इसमें से जागना हमारे परम प्रयास का स्वाभाविक और एकमात्र उद्देश्य होता और जगत् में जीवन अपरिवर्तनीय रूप में दुःख-दैन्य के साथ बंधा होता तो इस दासता में से भाग निकलना ही खोजने लायक एकमात्र रहस्य होता।

परंतु जगत्-सत्ता में पूर्ण सत्य संभव है क्योंकि यहाँ पर भगवान् सब चीजों को **सत्य की आँख** से देखते हैं और जगत् में पूर्ण आनंद संभव है क्योंकि भगवान् सभी चीजों का अमिश्रित स्वाधीनता के साथ रस लेते हैं। हम भी सत्य और आनंद का रस ले सकते हैं जिसे वेद ने **'अमृत'** यानी **'अमरता'** कहा है। अगर हम अभी अपनी अहंकारपूर्ण सत्ता को उनकी सत्ता के साथ **पूर्ण ऐक्य** में डाल सकें तो हम भागवत बोध और भागवत स्वाधीनता ग्रहण करने के लिये सहमत होते हैं।

जगत्, भगवान् की स्वयं अपनी सत्ता के अंदर गति है। हम भागवत चेतना के **चक्र** और **ग्रंथियाँ** हैं जो एक साथ जुड़कर उनकी गति की प्रक्रिया को सहारा देते हैं। संसार उनके अपने **आत्म-सचेतन** आनंद के साथ उनकी लीला है। एकमात्र उन्हीं का अस्तित्व है जो अनन्त, मुक्त और पूर्ण हैं। हम उसी सचेतन आनन्द के आत्म-गुणन या विविध रूप हैं जिन्हें **लीला** में उसके साथी बनने के लिये निक्षिप्त किया गया है। संसार एक सूत्र, एक लय-ताल,एक प्रतीक पद्धति है जो स्वयं भगवान् की चेतना में भगवान् स्वयं अपने प्रति प्रकट करते हैं-- इसका कोई जड़ भौतिक अस्तित्व नहीं है बल्कि इसका अस्तित्व स्वयं भगवान् की चेतना और आत्माभिव्यक्ति में हैं।

भगवान् की तरह हम भी अपनी आंतरिक सत्ता में ऐसा **तत्** हैं जो अभिव्यक्त हुआ है लेकिन अपनी बाहरी सत्ता में सूत्र के पद, लय-ताल की धुन, उस पद्धति के प्रतीक हैं। चलो हम भगवान् की गति को आगे बढ़ायें, उनकी लीला में भाग लें, उनके सूत्र को कार्यान्वित करें, उनके सामंजस्य को चरितार्थ करें, उनके पद्धति में अपने अंदर उनको अभिव्यक्त करें। यही हमारा आनन्द और हमारी आत्मपरिपूर्ति है। इसी उद्देश्य से हम जो विश्व से परे और उससे आगे है, विश्व सत्ता में प्रविष्ट हुए हैं।

पूर्णता को कार्यान्वित करना है, सामंजस्य को प्राप्त करना है। अपूर्णता, सीमांकन, मृत्यु, दुःख, अज्ञान, जड़ भौतिक सूत्र के पहले पद हैं और तभी तक समझ में नहीं आते जब तक हम अधिक विस्तृत पदों को कार्यान्वित न कर लें और सूत्र की फिर से व्याख्या न कर लें। ये संगीतकार के सुर मिलाते समय पहले विसंवाद है। अपूर्णता में से हमें पूर्णता का निर्माण करना है, सीमांकन में से अनन्ता को पाना है, मृत्यु में से अमरता को खोजना है, दुःख में से भागवत आनन्द को प्राप्त करना है, अज्ञान में से भागवत आत्म-ज्ञान का उद्धार करना है, जड़ भौतिक में से आत्मा को प्रकट करना है। अपने लिये और विश्व के लिये इस उद्देश्य को कार्यान्वित करना हमारी योग-साधना का उद्देश्य है।

योग का संपूर्ण उद्देश्य

योग द्वारा हम मिथ्यात्व में से सत्य में, दुर्बलता से बल में, दुःख-दर्द से आनंद में, दासता में से स्वाधीनता में, मृत्यु से अमरता में, अंधकार से प्रकाश में, अस्तव्यस्तता से शुद्धि में, अपूर्णता से पूर्णता में, आत्मविभाजन से ऐक्य में, और माया से भगवान् में उठ सकते हैं। योग में अन्य भी उपयोग विशेष और आंशिक लाभ हैं जो हमेशा अनुसरणीय नहीं होते। जो भगवान् की पूर्णता को पाने का लक्ष्य अपनाता है वही पूर्णयोग है। भागवत पूर्णता का साधक ही पूर्णयोगी है।

संदर्भ-श्री अरविन्द,
'मानव से अतिमानव की ओर'

❖❖❖

क्रमशः अगले अंक में...

"योग के आधार"

-श्री अरविन्द

श्रद्धा, अभीप्सा, आत्मसमर्पण

जो साधक उच्चतर ज्योति के साथ युक्त हो गया है और जिसे अनुभव प्राप्त हो गया है, वह इस पथ का अनुसरण कर सकता है, फिर उसके आधार के निम्नतर अंगों के लिये इस पथ पर चलना चाहे कितना भी कठिन क्यों न हो। जिसे इस ज्योति का स्पर्श मिल गया है, पर अभी अनुभव प्राप्त नहीं हुआ है वह भी, यदि उसके हृदय में पुकार उठी हो, उसे पूरा निश्चय हो गया हो, उसके अंतरात्मा की लगन ने उसे विवश कर दिया हो तो इस पथ का अनुसरण कर सकता है।

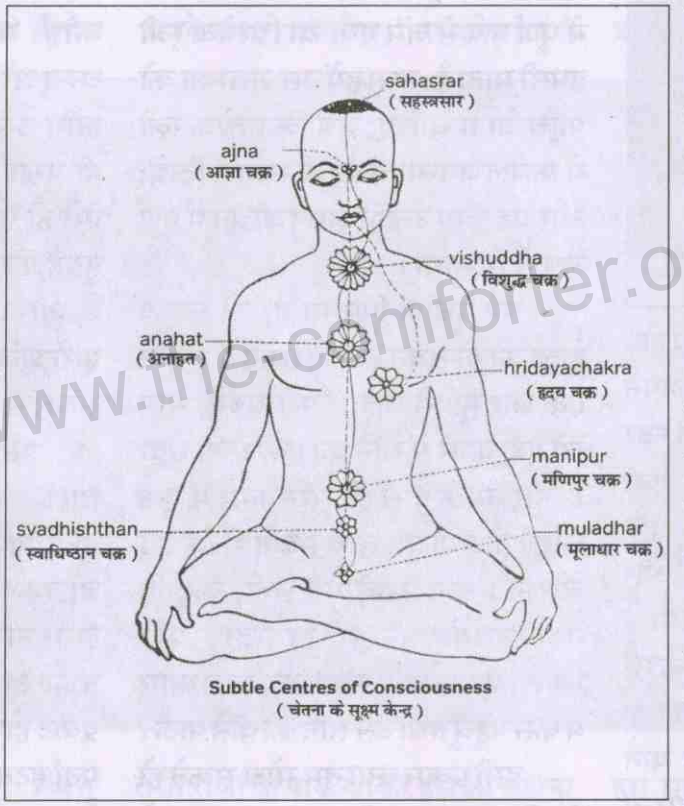

Subtle Centres of Consciousness
(चेतना के सूक्ष्म केन्द्र)

www.the-comforter.org

भगवान् की शैली मानव मन की शैली जैसी नहीं होती और न वह हमारी परिकल्पनाओं की अनुगामिनी ही होती है। भगवान् की शैली का विचार करना अथवा उनके विषय में यह निश्चित करना असंभव है कि उन्हें क्या करना चाहिये और क्या नहीं करना चाहिये; **क्योंकि हम जितना जान सकते हैं उससे कहीं अधिक भगवान् जानते हैं।** अगर हम भगवान् को स्वीकार करते हों तो मुझे ऐसा मालूम होता है कि यथार्थ युक्ति और भक्ति दोनों ही एक समान यह दावा करती हैं कि हमें बिना किसी हिचकिचाहट के उनके प्रति **श्रद्धा और आत्मसमर्पण** का भाव रखना चाहिये।

साधना का सच्चा भाव यही है कि भगवान् के ऊपर अपने मन को, प्राण की इच्छाओं को न लादा जाये, बल्कि भगवान् की इच्छा को ही ग्रहण किया जाये और उसका अनुसरण किया जाय। यह नहीं कहना चाहिये कि "यही मेरा अधिकार है, चाह है, दावा है, आवश्यकता है, प्रयोजन है, मुझे यह क्यों नहीं मिलता?" बल्कि अपने-आपको दे देना चाहिये, आत्मसमर्पण कर देना चाहिये और जो कुछ भगवान् दें, उसे प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करना चाहिये, जरा भी दु:ख नहीं करना चाहिये और न विद्रोह करना चाहिये-बस, यही उत्तम मार्ग है। उस समय जो कुछ भी तुम ग्रहण करोगे, वही तुम्हारे लिये उचित वस्तु होगी।

श्रद्धा, भगवान् के ऊपर निर्भरता, भागवत शक्ति के प्रति आत्म-समर्पण और आत्मदान ये सब आवश्यक और अपरिहार्य हैं। परंतु भगवान् के ऊपर निर्भर करने के बहाने आलस्य और दुर्बलता को नहीं आने देना चाहिये और न निम्न प्रकृति के आवेगों के प्रति आत्म-समर्पण ही करना चाहिये; इस निर्भरता के साथ साथ अथाक **अभीप्सा** बनी रहनी चाहिये तथा जो चीजें भागवत सत्य के मार्ग में बाधक होती हैं, उनका निरंतर त्याग होता रहना चाहिये। भगवान् के प्रति **आत्मसमर्पण** करने को, अपनी ही वासनाओं और निम्नतर प्रवृत्तियों के प्रति या अपने अहंकार या अज्ञान और अंधकार की किसी शक्ति के प्रति, जो कि भगवान् का मिथ्या रूप धारण करके आती है, आत्मसमर्पण करने का एक बहाना, एक आवरण या एक अवसर नहीं बना देना चाहिये।

क्रमश: अगले अंक में...

गतांक से आगे....

! ! मेरे गुरुदेव ! !

-स्वामी विवेकानन्द

यदि कोई मनुष्य जगत् की निस्सार वस्तुओं का त्याग कर देता है तो लोग उसे पागल कहते हैं। परन्तु ऐसे ही पुरुष पृथ्वी की संजीवनी होते हैं। ऐसे ही पागलपन से वे शक्तियाँ उत्पन्न हुई हैं, जिन्होंने इस संसार को हिला दिया है, और ऐसे ही पागलपन से भविष्य में ऐसी शक्तियों का जन्म होगा, जो हमारे संसार में उथल-पुथल मचा देंगी।

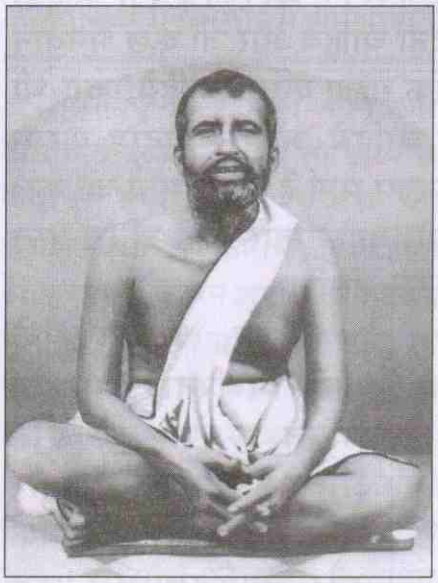

अत: वे उस भावना में तद्रूप होने का यत्न करने लगे और उन्होंने अपने इष्ट की सिद्धि के निमित भौतिक स्तर पर भी पूर्ण नियमानुकूल होने की चेष्टा की। उनके पास जो कुछ थोड़ी-बहुत सम्पति थी, वह सब उन्होंने छोड़ दी और धन कभी न छूने का प्रण कर लिया।

यह विचार कि 'मैं धन कभी नहीं छुऊँगा' उनके शरीर का मानो एक अंश ही हो गया। सम्भव है यह बात तुमको कुछ गूढ़ सी जान पड़े, परन्तु निद्रावस्था में भी यदि मैं उनके शरीर को किसी सिक्के से छू देता था तो उनका हाथ ही टेढ़ा हो जाता था और उनका सारा शरीर ऐसा प्रतीत होता था मानो लकवा मार गया हो ! दूसरा विचार जो उनके मन में उत्पन्न हुआ, वह यह था कि 'काम-वासना दूसरा शत्रु है।' **मनुष्य वस्तुत: आत्मस्वरूप है,** आत्मा निर्लिंग है, वह न तो स्त्री है, न पुरुष। उन्होंने सोचा कि काम तथा कांचन के ही कारण उनको माँ के दर्शन नहीं होते। सारा विश्व, माता का ही रूप है और वह प्रत्येक स्त्री के शरीर में वास करती है। प्रत्येक स्त्री माता का रूप है, अत: किसी स्त्री को स्त्री-भाव से मैं कैसे देख सकता हूँ ?-- यह विचार उनके मन में पूर्ण रूप से जम गया था। प्रत्येक स्त्री हमारी माता है; तथा हमें उस अवस्था को पहुँच जाना चाहिए, जब कि प्रत्येक स्त्री में केवल जगन्माता का ही स्वरूप दिखे; और यह ध्येय उन्होंने अपने जीवन में पूर्ण रूप से निभाया।

यह प्रचण्ड पिपासा है, जो मानव हृदय को ग्रस्त कर लेती है। बाद में उन्होंने एक बार मुझसे कहा, ''मेरे बच्चे, मान लो एक कमरे में सोने का एक थैला रखा है और उसके पास ही दूसरे कमरे में एक चोर है तो क्या तुम सोच सकते हो कि उस चोर को नींद आयेगी ? नहीं, कदापि नहीं-उसके मन में लगातार यही उथल-पुथल मची रहेगी कि मैं उस कमरे में कैसे पहुँचूँ तथा उस सोने को कैसे पाऊँ ?

इसी प्रकार क्या तुम सोच सकते हो कि जिस मनुष्य की यह दृढ़ धारणा हो गयी कि इस माया के प्रसार के पीछे एक **अविनाशी, अखाण्ड, आनन्दमय परमेश्वर है, जिसके सामने इन्द्रियों का सुख कुछ भी नहीं है ?** तो उस परमेश्वर को प्राप्त किये बिना वह मनुष्य चुपचाप कैसे बैठ सकता है ? क्या वह अपने प्रयत्न क्षण भर के लिए भी स्थगित कर सकता है ? कदापि नहीं-- असह्य छटपटाहट के कारण वह पागल हो जायेगा।'' इस दिव्य उन्माद ने बालक को ग्रस लिया। उस समय उसका कोई-प्रदर्शक न था, कोई उसे कुछ बतलानेवाला भी न था और सब यही समझते थे कि वह बालक (श्रीरामकृष्ण) पागल हो गया है। परन्तु यह जगत् की साधारण गति है। **यदि कोई मनुष्य जगत् की निस्सार वस्तुओं का त्याग कर देता है तो लोग उसे पागल कहते हैं।** परन्तु ऐसे ही पुरुष पृथ्वी की **संजीवनी** होते हैं। ऐसे ही पागलपन से वे शक्तियाँ उत्पन्न हुई हैं, जिन्होंने इस संसार को हिला दिया है, और ऐसे ही पागलपन से भविष्य में ऐसी शक्तियों का जन्म होगा, जो हमारे संसार में उथल-पुथल मचा देंगी।

इस प्रकार सत्य-लाभ के लिए उस बालक को छटपटाते अनेक दिन, सप्ताह तथा महीने व्यतीत होते रहे। अब उस बालक को विचित्र प्रकार के दर्शन होने लगे; नाना प्रकार के दृश्य दिखने लगे तथा अपने स्वरूप के अनेक रहस्य प्रकट होने लगे। जैसे एक के बाद दूसरा पर्दा हटता जा रहा हो !

प्रत्यक्ष जगन्माता ने ही गुरु-स्थान ग्रहण किया और उन्होंने उस बालक को उसके अभीप्सित सत्यों में दीक्षित किया। इसी समय उस स्थान पर अद्वितीय विदुषी एक सुन्दर स्त्री आ पहुँची। इस स्त्री के विषय में मेरे गुरुदेव कहा करते थे कि वह विद्वान नहीं, वरन् विद्वता की अवतार थी; मानव देह में साक्षात विद्वता ही थी।

संदर्भ-विवेकानंद वॉल्यूम-7

क्रमश: अगले अंक में...

कहानी...

सत्यकी महिमा

एक सत्यवादी धर्मात्मा राजा थे। उनके नगर में कोई भी साधारण मनुष्य बिक्री करने के लिये बाजार में अन्न, वस्त्र आदि कोई वस्तु लाता और वह वस्तु यदि सायंकाल तक नहीं बिकती तो उसे राजा खरीद लिया करते थे। लोकहित के लिये राजा की यह सत्य प्रतिज्ञा थी। अतः सायंकाल होते ही राजा के सेवक शहर में भ्रमण करते और किसी को कोई वस्तु लिये बैठे देखते तो वे उससे पूछकर और उसके संतोष के अनुसार कीमत देकर उस वस्तु को खरीद लेते थे।

एक दिन की बात है। स्वयं धर्मराज ब्राह्मण का वेष धारण करके घर की टूटी-फूटी व्यर्थ की चीजें, जो बाहर फेंकने योग्य कूड़ा-करकट थीं, एक पेटी में भरकर उन सत्यवादी धर्मात्मा राजा की परीक्षा करने के लिये उनके नगर में आये और बिक्री के लिये बाजार में बैठ गये, किंतु कूड़ा-करकट कौन लेता? जब सायंकाल हुआ, तब राजा के सेवक नगर में सदा की भाँति घूमने लगे। नगर में बेचने के लिये लोग जो वस्तुएँ लाये थे, वे सब बिक चुकी थीं। केवल ये ब्राह्मण अपनी पेटी लिये बैठे थे। राज सेवकों ने इनके पास जाकर पूछा-''क्या आपकी वस्तु नहीं बिकी?''उन्होंने उत्तर दिया-''नहीं।''

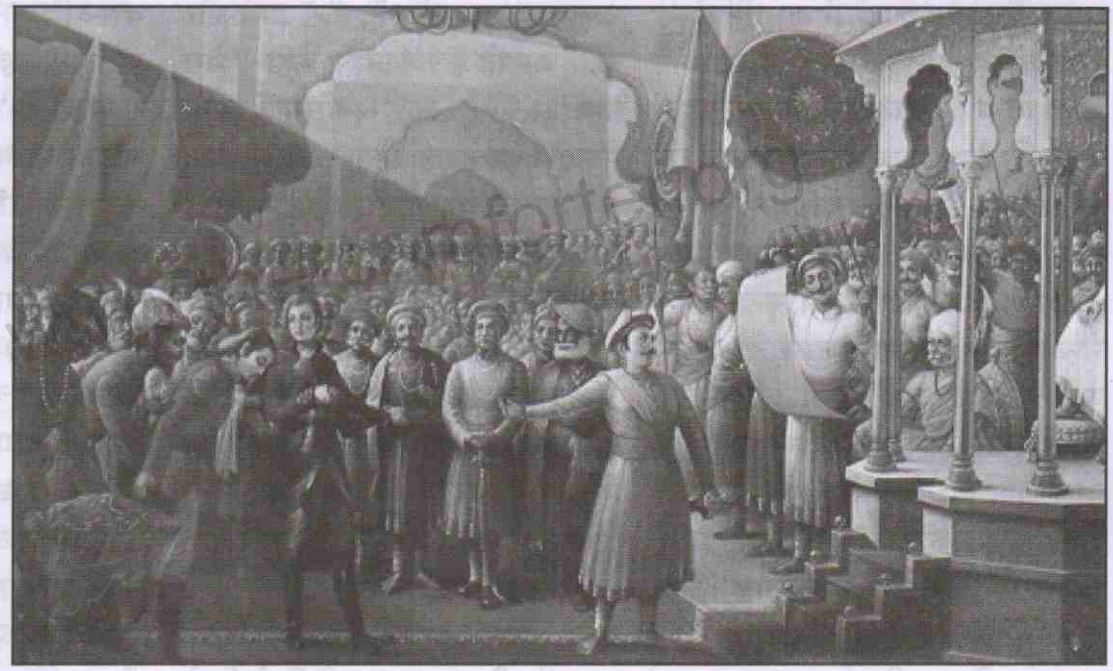

राजसेवक ने पुनः पूछा-''आप इस पेटी में बेचने के लिये क्या चीज लाये हैं? और उसका मूल्य क्या है?''ब्राह्मण ने कहा-''इसमें दारिद्र्य (कूड़ा-करकट) भरा हुआ है। इसका मूल्य है एक हजार रुपये।'' यह सुनकर राजसेवक हँसे और उन्होंने कहा-''इस कूड़ा-करकट को कौन लेगा, जिसका एक पैसा भी मूल्य नहीं है?''ब्राह्मण ने कहा-''यदि इसे कोई नहीं लेगा तो मैं इसे वापस अपने घर ले जाऊँगा,'' राजसेवकों ने तुरंत राजा के पास जाकर इसकी सूचना दी। इस पर राजा ने कहा-''उन्हें वस्तु वापस न ले जाने दो। मूल्य जो कुछ कम-से-कम हो सके, उन्हें संतोष कराकर वस्तु खरीद लो।''

राज सेवकों ने आकर ब्राह्मण से उस पेटी के दो सौ रुपये मूल्य कहा,

किंतु ब्राह्मण ने एक हजार से एक पैसा भी कम लेना स्वीकार नहीं किया। राजसेवकों ने पाँच सौ रुपये तक देना स्वीकार कर लिया, परंतु ब्राह्मण ने इनकार कर दिया। तब राजसेवकों में से कुछ व्यक्ति उत्तेजित होकर राजा के पास आये और बोले-''महाराज! उनकी पेटी में दारिद्र्य (कूड़ा-करकट) भरा हुआ है, एक पैसे की भी चीज नहीं है और पाँच सौ रुपये देने पर भी वे नहीं दे रहे हैं। ऐसी परिस्थिति में आपको उनकी वस्तु नहीं खरीदनी चाहिये।'' राजा ने कहा-''नहीं, हमारी सत्य प्रतिज्ञा है, हम सत्य का त्याग कभी नहीं करेंगे, इसलिये ब्राह्मण को, वे जो माँगें, देकर उस वस्तु को खरीद लो।''यह सुनकर राजसेवक राजा के इस आग्रह को देखकर हँसे और लौट आये। उन्होंने निरुपाय होकर ब्राह्मण को एक हजार रुपये दे दिये और उनकी पेटी ले ली। ब्राह्मण रुपये लेकर चले गये और राजसेवक पेटी को राजा के पास ले आये। राजा ने उस दारिद्र्य से भरी पेटी

को राजमहल में रखवा दिया। रात्रि में जब शयन का समय हुआ, तब राजमहल के द्वार से वस्त्राभूषण से सुसज्जित एक बहुत सुन्दर युवती निकली। राजा बाहर बैठक में बैठे हुए थे। उस स्त्री को देखकर राजा ने पूछा-"आप कौन हैं? किस कार्य से आयी हैं? और क्यों जा रही हैं?" उस स्त्री ने कहा- "मैं लक्ष्मी हूँ। आप **सत्यवादी धर्मात्मा हैं**, इस कारण मैं सदा से आपके घर में निवास करती रही हूँ, पर अब तो आपके घर में **दारिद्र्य** आ गया है, जहाँ दारिद्र्य रहता है वहाँ लक्ष्मी नहीं रहती। इसलिये आज मैं आपके यहाँ से जा रही हूँ।" राजा बोले-"जैसी आपकी इच्छा।"

थोड़ी देर बाद राजा ने एक बहुत ही सुन्दर युवा पुरुष को राजमहल के दरवाजे से निकलते देखा तो उससे पूछा-"आप कौन हैं? कैसे आये हैं। और कहाँ जा रहे हैं?" उस सुन्दर पुरुष ने कहा-"मेरा नाम **दान** है। आप सत्यवादी धर्मात्मा हैं, इस कारण सदा मैं आपके यहाँ निवास करता रहा हूँ। अब जहाँ लक्ष्मी गयी है, वहीं मैं जा रहा हूँ; क्योंकि जब लक्ष्मी चली गयी, तब आप दान कहाँ से करेंगे?" तब राजा बोले-"बहुत अच्छा।"

उसके बाद फिर एक सुन्दर पुरुष निकलता दिखायी दिया। राजा ने उससे भी पूछा- "आप कौन हैं? कैसे आये हैं और कहाँ जा रहे हैं?" उसने कहा-"मैं **यज्ञ** हूँ। आप सत्यवादी धर्मात्मा हैं, अतः आपके यहाँ मैं सदा से निवास करता रहा। अब आपके यहाँ से **'लक्ष्मी'** और **'दान'** चले गये तो मैं भी वहीं जा रहा हूँ; क्योंकि बिना सम्पत्ति के आप **'यज्ञ'** का अनुष्ठान कैसे करेंगे?" राजा बोले-"बहुत अच्छा"।

तदनन्तर फिर एक युवा पुरुष दिखायी दिया। राजा ने पूछा-"आप कौन हैं? कैसे आये और कहाँ जा रहे हैं?" उसने कहा-"मेरा नाम **'यश'** है। आप धर्मात्मा सत्यवादी हैं, अतः मैं आपके यहाँ सदा से रहता आया हूँ; किंतु आपके यहाँ से लक्ष्मी, दान, यज्ञ सब चले गये तो उनके बिना आपका 'यश' कैसे रहेगा? इसलिये मैं भी वहीं जा रहा हूँ, जहाँ वे गये हैं।" राजा ने कहा-"ठीक है।"

तत्पश्चात् एक सुन्दर पुरुष फिर निकला। उसे देखकर उससे भी राजा ने पूछा-"आप कौन हैं, कैसे आये और कहाँ जा रहे हैं?" उसने कहा-"मेरा नाम **'सत्य'** है। आप धर्मात्मा हैं, अतः मैं सदा आपके यहाँ रहता आया हूँ; किंतु अब आपके यहाँ से लक्ष्मी, दान, यज्ञ, यश सब चले गये तो मैं भी वहीं जा रहा हूँ।" राजाने कहा-"मैंने तो आपके लिये ही इन सबका त्याग किया है, आपका तो मैंने कभी त्याग किया ही नहीं, इसलिये आप कैसे जा सकते हैं? मैंने लोकोपकार के लिये यह सत्य प्रतिज्ञा कर रखी थी कि कोई भी व्यक्ति मेरे नगर में बिक्री करने के लिये कोई वस्तु लेकर आयेगा और सायंकाल तक उसकी वह वस्तु नहीं बिकेगी तो मैं उसे खरीद लूँगा।

आज एक ब्राह्मण दारिद्र्य लेकर बिक्री करने आये जो एक पैसे की भी चीज नहीं; किंतु सत्य की रक्षा के लिये ही मैंने विक्रेता ब्राह्मण को एक हजार रुपये देकर उस दारिद्र्य (कूड़ा-करकट) को खरीद लिया। तब लक्ष्मी ने आकर कहा कि आपके घर में दारिद्र्य का वास हो गया, इसलिये मैं नहीं रहूँगी। इसी कारण मेरे यहाँ से लक्ष्मी आदि सब चले गये। ऐसा होने पर भी, **मैं आपके (सत्य) बल पर डटा हुआ हूँ।**" यह सुनकर सत्य ने कहा-"जब मेरे लिये ही आपने इन सबका त्याग किया है, तब मैं नहीं जाऊँगा।" ऐसा कहकर वह राजमहल में वापस प्रवेश कर गया।

थोड़ी ही देर बाद **'यश'** लौटकर राजा के पास आया। राजा ने पूछा "आप कौन हैं और क्यों आये हैं?" उसने कहा-"मैं वही यश हूँ, आप में सत्य विराजमान है। चाहे कोई कितना ही यज्ञकर्ता, दानी और लक्ष्मीवान् क्यों न हो, **किंतु बिना सत्य के वास्तविक कीर्ति नहीं हो सकती।** इसलिये जहाँ सत्य है, वहीं मैं रहूँगा।" राजा बोले-"बहुत अच्छा।" तदनन्तर यज्ञ आया। राजा ने उससे पूछा-"आप कौन हैं और किसलिये आये हैं?" उसने कहा-"मैं वही यज्ञ हूँ, जहाँ सत्य रहता है, वहीं मैं रहता हूँ, चाहे कोई कितना ही दानशील और लक्ष्मीवान् क्यों न हो, किंतु बिना सत्य के यज्ञ शोभा नहीं देता। आप में सत्य है, अतः मैं यहीं रहूँगा।" राजा बोले-"बहुत अच्छा।"

तत्पश्चात् दान आया। राजा ने उससे भी पूछा-"आप कौन हैं और कैसे आये हैं?" उसने कहा-"मैं वही दान हूँ। आप में सत्य विराजमान है और जहाँ सत्य रहता है वहीं मैं रहता हूँ; क्योंकि कोई कितना ही लक्ष्मीवान् क्यों न हो, बिना सद्भाव के दान नहीं दे सकता। आपके यहाँ सत्य है, इसलिये मैं यहीं रहूँगा।" राजा बोले-"बहुत अच्छा।"

इसके अनन्तर लक्ष्मी आयी। राजा ने पूछा-"आप कौन हैं और क्यों आयी हैं?" उसने कहा-"मैं वही लक्ष्मी हूँ। आपके यहाँ सत्य विराजमान है। आपके यहाँ यश, यज्ञ, दान भी लौट

आये हैं। इसलिये मैं भी लौट आयी हूँ।'' राजा बोले-''देवी ! यहाँ तो दारिद्र्य भरा हुआ है, आप कैसे निवास करेंगी?''लक्ष्मी ने कहा-''राजन् !जो कुछ भी हो, मैं सत्य को छोड़कर नहीं रह सकती।'' राजा बोले-''जैसी आपकी इच्छा।''

तदनन्तर वहाँ स्वयं धर्मराज उसी ब्राह्मण के रूप में आये। राजा ने पूछा-''आप कौन हैं और कैसे आये हैं?'' धर्मराज बोले-''मैं साक्षात् धर्म हूँ, मैं ही ब्राह्मण का रूप धारण करके एक हजार रुपये में आपको दारिद्र्य दे गया था। आपने सत्य के बल से मुझ धर्म को जीत लिया। मैं आपको वर देने के लिये आया हूँ, बतलाइये, मैं आपका कौन-सा अभीष्ट कार्य करूँ?''राजा ने कहा-''आपकी कृपा है। मुझको कुछ भी नहीं चाहिये। आप जिस प्रकार सदा करते आये हैं, उसी प्रकार करते रहिये।''

इस दृष्टान्त से यह सिद्ध हो गया कि जहाँ सत्य है, वहाँ सब कुछ है। वहाँ कभी सम्पत्ति, दान, यज्ञ, यश की कमी भी हो जाय तो मनुष्य को घबराना नहीं चाहिये। यदि सत्य कायम रहेगा तो ये सभी आप ही लौट आयेंगे और ये न आयें तो भी कोई हानि नहीं, उसका परम कल्याण है। अतः कल्याणकारी पुरुष को सत्य का कभी त्याग नहीं करना चाहिये, बल्कि निष्काम भाव से उसका अवश्य दृढ़तापूर्वक पालन करना चाहिये।

यथार्थ भाषण, सद्गुण और सदाचार का नाम ही सत्य है। भगवान् ने गीतामें कहा है-

सद्भावे साधुभावे च सदित्येतत्प्रयुज्यते।

प्रशस्ते कर्मणि तथा सच्छब्दः पार्थ युज्यत यज्ञे तपसि दाने च स्थितिः सदिति चोच्यते।

कर्म चैव तदर्थीयं सदित्येवाभिधीयते।।

''सत्-इस प्रकार यह परमात्मा का नाम सत्यभाव (परमात्मा के अस्तित्व)-में और श्रेष्ठभाव (सद्गुण)में प्रयोग किया जाता है तथा हे पार्थ ! उत्तम कर्म (सदाचार)-में भी सत् शब्द का प्रयोग किया जाता है तथा यज्ञ, तप और दान में जो स्थिति (निष्ठा) है वह भी 'सत्' इस प्रकार कही जाती है और उस परमात्मा के लिये किया हुआ (भगवदर्थ) कर्म तो निश्चय ही 'सत्' ऐसे कहा जाता है।'' किसी कवि की यह उक्ति प्रसिद्ध है-

बंदा सत नहिं छाँड़िये,
सत छाँड़े पत जाय।
सत की बाँधी लच्छमी
फेरि मिलेगी आय।।

सनातन सत्य को पृथ्वी पर स्थापित करने के लिए परब्रह्म परमात्मा समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग ने कल्कि के रूप में दसवां अवतार लिया। मानव से अतिमानवत्व की ओर का पथ बताया, मानव कल्याण के लिए सिद्धयोग को मानव के हृदय पटल पर स्थापित किया। पृथ्वी पर अपना मुख्यालय-'**अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर**' स्थापित किया। पुरी दुनिया तक सनातन सत्य को पहुँचाने के लिए-25 दिसम्बर, 1997 को वेबसाइट लॉन्स की-

Web:www.the-comforter.org

मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए अपने श्रीमुखार्विन्द से **संजीवनी मंत्र** दिया। सघन मंत्र जप और नियमित रूप से सुबह-शाम 15 मिनट ध्यान करने का आदेश दिया। अपनी सामर्थ्य के अनुसार यथासंभव अपने-अपने स्तर पर इस वैदिक दर्शन का प्रचार-प्रसार करने का आदेश दिया।

पूरी दुनिया तक सनातन सत्य को पहुँचाने के लिए नीला ध्वज दिया। और इसी नीले ध्वज तले कार्य करने का आदेश दिया।

इसलिए समर्थ सद्गुरुदेव से जुड़े हुए शिष्य को अपने सद्गुरुदेव की दिव्य वाणी को जन मानस तक पहुँचाने के लिए परम सत्य के साथ खड़े रहते हुए ही कार्य करना चाहिए। सद्गुरु आज्ञा सर्वोपरि है-सत्य है, सत्य है, सत्य है।

❖❖❖

समर्पण--प्रभु के चरणों में प्रीति की बात ही कुछ न्यारी है। हम प्रभु के ऐसे हो जाते हैं मानो हम बिक गये। किसी ने हमें उनकी भेंट चढ़ा दी। हम पूर्ण समर्पित हो जाते हैं। रोम-रोम उन्हें ही रटता रहता है, उन्हीं की धुन में डूबा रहता है। उनके दर्शन की अभिलाषा, आगमन की प्रतीक्षा, बस यही जीवन का क्रिया-कलाप रह जाता है। इसी एक मिलन की आशा पर जीवन चलता है और प्राण टिके रहते हैं। धन्य है यह प्रेम और धन्य है ये प्रेमी। दोनों एक दूसरे में निवास करते हैं।

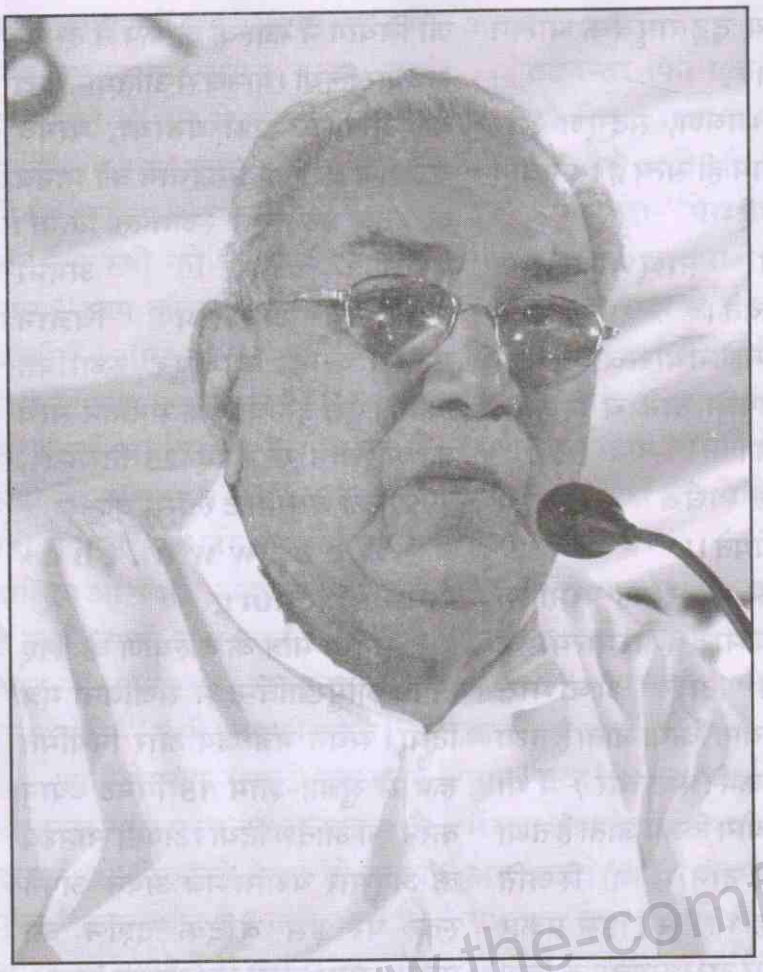

सत्य के लिए
हार्दिक प्रार्थना

"समस्त जगत् मिथ्यात्व में डूबा हुआ हैं इसलिए जितने भी क्रिया-कलाप उठेंगे, वे सब झूठे होंगे और यह स्थिति लम्बे समय तक चल सकती है। और यह लोगों को और देश को बहुत नुकशान पहुँचायेगी।

करने लायक काम बस एक ही है:-हृदय से भागवत हस्तक्षेप के लिए प्रार्थना करो, क्योंकि एक वही चीज है जो हमारी रक्षा कर सकती है और भी इसके प्रति सचेत हो सकते है। उन सबको यह दृढ़ निश्चय कर लेना चाहिए कि वे "**सत्य**" का ही "**पक्ष**" लेंगे और "**सत्य**" में ही "**काम**" करेंगे।

इसमें कोई समझौता नहीं होना चाहिए, यह एकदम अनिवार्य है। यही एकमात्र तरीका है। चाहे ऐसा प्रतीत हो कि चीजें, हमारे लिए बिगड़ती जा रही हैं,और यह वर्तमान प्रबल मिथ्यात्व के कारण अवश्य होगा, फिर भी हमें "**सत्य**" पर डटे रहने के निर्णय से डिगना नहीं चाहिए, **यही एक तरीका है।**"

(संदर्भ-श्रीमां, श्री अरविन्द आश्रम-
8 जुलाई 1971, लालकमल-पृष्ठ-279)

मुख्यालय:- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342003
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

❖❖❖

शिमोगा (कर्नाटक)– KSRP में ध्यान सिद्धयोग शिविर आयोजित (21 जून 2018)

जोधपुर के शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशालाओं में गुरुदेव सियाग सिद्धयोग शिविरों का आयोजन। (मई–जून 2018)

www.thecomforter.org

हिमाचल प्रदेश के सोलन, सिरमौर व नाहन जिलों के विभिन्न विद्यालयों व हरियाणा के सोनीपत में सी.आर.पी.एफ. में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन। (13-22 जून 2018) हजारों विद्यार्थी सिद्धयोग से लाभान्वित हुए।

विश्व योग दिवस पर सामूहिक ध्यान योग शिविर

कोटा. अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर की शाखा कोटा ग्राम सिन्ता आश्रम पर सामूहिक शक्तिपात दीक्षा एवं ध्यान का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। संस्थान के संस्थापक व संरक्षक समर्थ गुरुदेव रामलाल सियाग की दिव्य वाणी में मन्त्र दीक्षा के पश्चात ध्यान के दौरान साधकों को स्वतः यौगिक क्रियाएं जैसे आसन बन्ध व प्रणायाम इत्यादि स्वतः होने लगे। ध्यान के समय इन होने वाली यौगिक क्रियाओं से साधक सभी प्रकार के शारिरिक, मानसिक रोगों व सभी प्रकार के नशो से बिना किसी परेशानी के मुक्त हो जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर बहरोड़ (अलवर) में ध्यान सिद्धयोग शिविर आयोजित। (21 जून 2018)

सद्‌गुरुदेव सियाग के प्रथम महाप्रयाण दिवस पर जोधपुर आश्रम में सामूहिक ध्यान कार्यक्रम आयोजित। (5 जून 2018)

गुरुदेव सियाग की तस्वीर का कमाल

जोधपुर में ग्रीष्मकालीन अध्यापक प्रशिक्षण सत्र के दौरान अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के तत्वावधान में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन किया गया। जिसमें सैंकड़ों अध्यापकों ने सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र को सुनकर सद्गुरुदेव के चित्र पर 15 मिनट ध्यान किया गया। ध्यान के दौरान कई अध्यापकों को बड़े अद्भुत दर्शन हुए-जिसमें से कुछ अध्यापकों ने अपनी अनुभतियाँ लिखकर दी हैं-

नील बिन्दु का दिखना

आज मैंने ध्यान लगाया। ध्यान के दौरान मैंने पृथ्वी के आकार का नीला गोला देखा व मुझे ऐसा लगा कि मैं कहीं खो गया हूँ। मन में शान्ति महसूस हुई। पहले तो शरीर में पॉइंट की तरह महसूस हुआ था।

दिनांक -09-06-2018
नाम- जुगल किशोर
पद-अध्यापक
निवास- सुथला, सी.एस.बी, जोधपुर

आज्ञा चक्र पर प्रकाश का दिखना

ध्यान के दौरान मुझे बहुत अच्छा लगा व मेरे पैर में झंझनाहट हुई जिससे पैर की नसों में गति हुई। आज्ञा चक्र पर पीला प्रकाश हुआ जो बहुत अच्छा लगा।

श्री मती राधा देवी जी.यू.पी.एस मण्डलनाथ चौ.
प्लाट नं.-14, जैनदादावाड़ी के पीछे,
देवड़ा कॉलोनी, मण्डोर, जाधपुर(राज.)

ध्यान में गुरुदेव के दर्शन

प्रशिक्षण (हिन्दी) केम्प के.जी.बी.वी नन्दवन में दिनांक 01.06.2018 को सिद्धयोग का कार्यक्रम हुआ। आश्रम से पधारे साधकों ने सिद्धयोग दर्शन की जानकारी देने के बाद गुरुदेव का मंत्र सुनाया और 10 मिनट गुरुदेव की तस्वीर का ध्यान करवाया, ध्यान के दौरान मैंने जो महसूस किया उसका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है-

1. ध्यान में गुरुदेव ने नवजात शिशु से परिपक्व अवस्था तक के चलचित्र के रूप में दर्शन दिये।

2. मुँह में छालों से जो परेशानी हो रही थी, गुरुदेव ने उस तरफ इशारा किया, छालों में तेज जलन महसूस हुई और कुछ देर बाद चिकनाई महसूस हुई।

3. गत वर्ष से पैर में तकलीफ थी जिससे नीचे बैठना मुश्किल हो रहा था तो ध्यान के समय पैर में दर्द के स्थान पर तनाव असहनीय महसूस करते हुए फिर सहज भाव में आ गया।

नाम-बाबूलाल सारस्वत
निवास-खेमे का कुआ, जोधपुर
मो.-7891225907

भोलेनाथ के साक्षात् दर्शन हुए

दिनांक 01.06.2018 को सिद्धयोग शिविर में मैंने ध्यान लगाया तो 10 मिनट के ध्यान के दौरान मुझे भगवान् भोलेनाथ के साक्षात् दर्शन हुऐ। अत: मैंने माना कि ध्यान से हमें जीवन में लाभ मिल सकते हैं।

श्रीमती किरण कंवर राठौड़
पाल बालाजी के पास,जोधपुर (राज.)

सच्ची माँग

''यह संसार का साधारण नियम है कि देवता भी बिना माँगे अपने आपको नहीं दे सकते। शाश्वत भी मनुष्य के पास अनजाने में नहीं आता।

हर भक्त अपने अनुभव से जानता है कि परमात्मा अपने अनिर्वचनीय सौंदर्य और आनंद के साथ तभी प्रकट होते हैं, जब हम उनका आह्वान् करें।''

-श्री अरविन्द,
'लाल कमल' पुस्तक पृष्ठ-58

सिद्धयोग द्वारा अद्‌भुत साहित्य सृजन

गतांक से आगे....

पद्य भाग में दुनिया का वास्तविक चित्रण

मनुष्य पतित हैं जो, कुत्तों को पाला करते हैं।
अपनी पवित्र गोद को भी, पिल्लों से भर लेते हैं।।
मानव के बच्चे भी, भूख से मारे फिरते हैं।
कोई भी दया करके, नहीं कपड़े चोकर देते हैं।।
रुग्ण होकर अकुलाते हैं, कोई न दवा पिलाते हैं।
डूब जाते अंधेरे में, प्रकाश नहीं कर पाते हैं।।
पिछड़ जाते हैं, अपना विकास नहीं कर पाते हैं।
युवा बेरोजगारों को आज, कार्य भी नहीं मिल पाते हैं।।
अरे पशु के भी भाग हैं बड़े, सोने के लिए महल पड़े।
मानव ही बड़ा अभागा है, दर-दर भटकता जाता है।।
रहने के लिए भी उनको, झोंपड़ा नहीं मिल रहा है।
गोबर लेपा एक खाली, कोठड़ा भी नहीं मिल रहा है।।
झोंपड़े का घास तुफान ले गया है,
कुछ बचा था उड़ा ले गया है।
मानव की पौरुषता पर, कलियुग का कलंक लगा है।।
भयंकर अतिवृष्टि ने, जला दिया गोबर का कोठड़ा।
घन घोर कलियुग के अंधेरे ने,
खराब कर दिया मानव का यह खोपड़ा।।
कोई किसी को ठग रहा है, कोई आपस में लड़ रहा है।
कोई अपना गुट बना रहा है,
कोई उग्रवाद का झंडा गाड़ रहा है।।
बना रहा है बड़े-बड़े, परमाणु बमों का भंडार।
खून से भीगा रहता है, चुरा हो या तलवार।।
क्या अंजाम होगा इस, फैलती कट्टर दुश्मनी का।
क्या होगा सुंदर सलौनी, इस प्यारी धरती का।।
कहाँ गई अपनी मानवीयता, कहाँ गया वह प्यारा नाता।
कहाँ गई जिसे कहते थे माता,
किसी को नहीं क्या प्यार सिखाना आता।।
बर्तन लेकर माँग रहे हैं, गरीब धनवान हट्ठे-कट्ठे।
नहीं डालता कोई उन्हें, सड़े हुए भी पत्ते।।
देते हैं एक ऊपर से, सुंदर प्यारी सी गाली।
फिर भी तुम्हें नहीं, थोड़ी सी शर्म आने वाली।।
मानव अपने खोदे गड्ढे में, खुली आँखों से गिर रहा है।
अपने धारदार छुरे से, अपना ही पेट चीर रहा है।।
करते हैं युद्ध बेवफाई से, करते हैं शोषण महंगाई से।
भरे घमंड से अकड़ते हैं, फालतू में ही बड़बड़ाते हैं।।
अब ना जाने क्या होने वाला है,
अंत मानव का आने वाला है।
उल्टे पाँव चल रहा है, सिर दीवार से फोड़ रहा है।।
घी-दूध की नदियाँ, स्वर्ग रूपी धरती पर बहती थी।
देवता पहरा देते थे, वह रात्रि अंधेरी ना थी।

अपनी रोटी दान देते थे, हाथ तक खाली नहीं भेजते थे आज गरीब सभी रो रहे हैं, नानी सभी सो रहे हैं आज रक्षक ही भक्षक बन रहा है, जो मेहनत करके देता है उसी का खून पी रहा है, ना कोई किसी से कम है खाता न कोई गम है। इन्हें शर्म आने वाली है तामसिकता बड़ी मतवाली है शिक्षा हो रही है मानवता नाच रही हो कर नंगी। दोषी कौन कल आने वाला है, जब विनाश आने वाला है जो वस्तु खाने वाली पैरों के नीचे कुचल रहे हैं बीड़ी जर्दा गुटखा पान बड़े चाव से खा रहे हैं। गंगाजल को छोड़कर शराब का पान कर रहे हैं। मनुष्य अपने शरीर को भारी मसान बना रहा है। मानवीयता तो संकीर्ण विचारों वाली हर चूड़ी को अपनी नारी समझने वाली बात ना समझ में आने वाली धर्म युद्ध को भड़काने वाली बस अब खूब खेली यह खून की होली। भर ली मासूम बच्चों से खाली पड़ी अपनी झोली। बस करो अपने घर को ही आग लगाकर इमानदार बताना झूठे कर्मकांड पाखंड सरे आम जनता को बताना तेरी करतूतों की सजा तुम्हें अपने आप मिल रही है। कहीं तूफान आ रहा है, कहीं भूमि हिल रही है, फूट रहे हैं ज्वालामुखी। आगाह अंगारे उगल रही है आ रही है भयंकर बाढ़ें, बुराइयों की सजा मिल रही है। यह मानव ओ जी लो हो गया है, बिना गुरु के खोखला हो गया है। नागराज पाताल में चला गया है। मनुष्य पर तमोगुण छा गया है। सूर्य क्षितिज में डूब रहा हैं, मारी कमला में गिर रहे हैं,
पक्षी वृक्ष की खोखर में पढ़ रहे हैं।

❖❖❖

-तरंजन भादु, बलदेव नगर, बाड़मेर

क्रमशः अगले अंक में...

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

"Man", a transitional Being.

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

"आदि" और "अन्त" का मिलन?

भौतिक विज्ञान की भाषा?

आकाशतत्व और पृथ्वी तत्व का मिलन।

वैदिक मनोविज्ञान की भाषा?

सम्पूर्ण मानव जाति के सातों कोश: (1) अन्नमयकोश, प्राणमयकोश, मनोमयकोश, विज्ञानमयकोश, आनन्दमयकोश, चित्तमयकोश सत्यमयकोश

बाइबल की भाषा में?

"God-spirit meets God-matter", and that is divine life in a body."

स्वर्ग (ईश्वर) पृथ्वी को आलिंगन कर चूम लेगी, और वे दोनों एक हो जावेंगे।

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

We have denied the divinity in matter to confine it in our holy places, and now matter is taking its revenge - we called it crude, and crude it is. As long as we accept this imbalance, there is no hope for the earth: we will swing from one pole to the other - both equally false, from material enjoyment to spiritual austerity without ever finding our plenitude. We need both vigor

www.the-comforter.org

मनुष्य और विकास

-श्री अरविन्द

मनुष्य एक संक्रमणकालीन, विकसनशील प्राणी है। वह अभी विकास के पथ पर है। अभी वह अंतिम विकास नहीं है। उसका और उच्चतम विकास अभी बाकी है। सृष्टि विकास से आज तक सर्वोच्च प्राणी के रूप में मनुष्य ही है लेकिन वह अभी अपूर्ण है। उसके कोशों के सर्वांगीण विकास के लिए हर युग में वह परम सत्ता अवतार ग्रहण कर मनुष्य के विकास सोपान में उत्तरोत्तर सीढ़ियाँ लगाकर, तद्रूप का निर्माण कर रही है। मानव विकास कार्य में सद्गुरुदेव सियाग ने सर्वोत्तम सोपान लगाया है।

लेकिन पार्थिव सृजन की इस प्रक्रिया और अर्थ का यह विवरण स्वयं मनुष्य के मन में हर बिंदु पर आपत्ति उठाये जाने की संभावना रखता है। क्योंकि विकास अपनी यात्रा में अभी तक आधे रास्ते पर ही है, अभी अज्ञान में है, अभी अर्द्ध-विकसित मानव जाति के मन में अपने निजी प्रयोजन और अर्थ को खोज रहा है।

विकास के सिद्धांत पर, यह कहकर आपत्ति उठायी जा सकती है कि उसकी नींव काफी नहीं है और वह पार्थिव जीवन की प्रक्रिया की व्याख्या के रूप में अनावश्यक है। यदि विकास को मान भी लिया जाये तब भी वह सन्देहास्पद रहता है कि क्या मनुष्य के अंदर उच्चतर विकसनशील सत्ता में विकसित होने की क्षमता है? और यह भी संदेहास्पद है कि क्या विकास जहाँ तक पहुँच चुका है, उसमें उससे आगे जाने की संभावना है?

क्या अतिमानसिक विकास के, पूर्ण ऋत-चित् के, ज्ञान की सत्ता के प्रकट होने की पार्थिव प्रकृति के आधारभूत अज्ञान में संभावना है? यहाँ की अभिव्यक्ति में अध्यात्म पुरुष के जो क्रिया-कलाप हो रहे हैं उनकी एक और व्याख्या दी जा सकती है जो न तो विकास के सिद्धांत को अपनाती हो और न यह मानती हो कि अभिव्यक्ति का कोई उद्देश्य है। ज्यादा अच्छा होगा यदि हम आगे बढ़ने से पहले संक्षेप में उस विचारधारा को भी देख लें जो ऐसी व्याख्या को संभव बनाती है।

यह मानते हुए कि सृष्टि कालातीत शाश्वत की कालिक शाश्वतता में अभिव्यक्ति हे, मान लें कि चेतना की सात श्रेणियाँ हैं और जड़ निश्चेतना को आध्यात्म पुरुष के पुनरारोहण की नींव के रूप में रखा गया है, मान लें कि पुनर्जन्म एक तथ्य है, पार्थिव व्यवस्था का एक भाग है, फिर भी व्यष्टिगत सत्ता का आध्यात्मिक विकास, इन मान्यताओं में से किसी का या सबका सम्मिलित निष्कर्ष हो, यह अनिवार्य नहीं हैं पार्थिव जीवन की आंतरिक प्रक्रिया और उसके आध्यात्मिक अर्थ के बारे में एक और दृष्टि अपनाना भी संभव है।

अगर बनी हुई हर चीज अभिव्यक्त दिव्य अस्तितव का रूप है तो हर एक अपने अंदर आसीन आध्यात्मिक उपस्थिति के कारण अपने-आपमें दिव्य है, फिर प्रकृति में उसका रंग-रूप या स्वभाव चाहे जैसा हो। अभिव्यक्ति के प्रत्येक रूप में भगवान् सत्ता का आनन्द लेते हैं और उसके अंदर परिवर्तन या प्रगति की कोई आवश्यकता नहीं।

कार्यान्वित संभावनाओं के जिस किसी व्यवस्थिति प्रदर्शन या श्रेणीक्रम की अनन्त सत्ता की प्रकृति के कारण जरूरत होती है, उसके लिये चेतना के प्ररूपों, रूपों की उमड़ती बहुसंख्या, अनगिनत विभिन्नताओं द्वारा और हमारे चारों ओर हर जगह दिखायी देनेवाली प्रकृतियों द्वारा पर्याप्त रूप से व्यवस्था होती है। सृष्टि में कोई सोद्देश्य प्रयोजन नहीं है और हो भी नहीं सकता क्योंकि अनंत के अंदर सब कुछ हैं ऐसी कोई चीज नहीं है जिसे पाने की भगवान् को जरूरत हो या जो उनके पास न हो। अगर सृष्टि और अभिव्यक्ति है तो किसी प्रयोजन के लिये नहीं बल्कि सृजन और अभिव्यक्ति के आनंद के लिये। तो फिर ऐसी विकसनशील गति की जरूरत नहीं है जिसका कोई गन्तव्य चरम उत्कर्ष हो या क्रियान्वित या निष्पन्न करने के लिये कोई लक्ष्य हो या अंतिम पूर्णतातक जाने की प्रेरणा हों

वस्तुतः हम देखते हैं कि सृष्टि के तत्त्व स्थायी और अपरिवर्तनशील हैं। हर एक प्रारूप अपने-आपमें रहता है, न तो उसे अपने-आपसे भिन्न कुछ और बनने की जरूरत है और न वह इसकी कोशिश ही करता है। यह मान भी लिया जाये कि सत्ता के कुछ प्रारूप लुप्त हो जाते हैं और कुछ अन्य पैदा हो जाते हैं तो यह इसलिये है कि विश्व में चित्-शक्ति उन रूपों से अपने जीवन-आनन्द को खींच लेती है और अपने हर्ष के लिये कुछ औरों का सृजन करने के लिये प्रवृत्त होती है। लेकिन जीवन का हर एक प्रारूप, जब तक कि वह रहता है, अपना निजी प्रतिमान रखता है और छोटे-मोटे हेर-फेर के बावजूद अपने प्रतिमान के प्रति निष्ठावान् रहता है।

संदर्भ-'दिव्य जीवन'
पुस्तक से

❖❖❖

क्रमशः अगले अंक में...

''ध्यान''

''ध्यान हमारी सत्ता की ऐसी स्थिति है, जिसमें हमें एक प्रकार की विश्रांति प्राप्त होती है और अपने मन को उसकी चंचल धारा से हटाकर एक ऐसी स्थिर अवस्था में छोड़ देते हैं, जो अवस्था मन की लहरों, हिलोरों और कम्पनों तक के पीछे अटल चट्टान की तरह विद्यमान है।''

-महर्षि श्री अरविन्द

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342003
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

साधक और साधना

सद्गुरु आज्ञा में रहकर, सद्गुरु कृपा से आराधना करके ही व्यक्ति 'साधक' कहलाने के योग्य बनता है।

'मनुष्य', ईश्वर की सर्वोच्च कृति है। इस शरीर रूपी सुन्दर ग्रन्थ को पढ़ने के लिए, अपने जीवन की असंख्य समस्याओं व कष्टों से मुक्ति पाने के लिए, मनुष्य सद्गुरु चरणागत होकर, सद्गुरु आज्ञा में रहकर, साधना कर, अपने जीवन की पहेली को साधता है और वैदिक दर्शन के सर्वोत्तम शिखर-**'तत्त्वमसि'** और **'तद्रूप'** अर्थात् तत् रूप (मनुष्य का वही रूप हो जाता है जो ईश्वर का है) में एकाकार हो जाता है।

मनुष्य, जीवन में असंखय पीड़ाओं, कष्टों, रोगों व कमियों की गठरी को लेकर पृथ्वी पर जन्मता है, और इस जीवन में उसके स्वरूप (**तद्रूप**) में बदलने के लिए कर्म करता है। इस माया जगत् में विचरते ही अपने **'तद्रूप'** की स्थिति को भूल जाता है और मनुष्य जीवन वृथा ही चला जाता है। अवतार और सद्गुरु ही मनुष्य को सत्य का पथ दिखाकर, उसको साधना की राह दिखाकर, **'तत्त्वमसि'** के स्वरूप की यात्रा को पूर्ण कराते हैं।

'तत्त्वमसि' की स्थिति को अनुभूत करने के लिए मनुष्य को समर्थ सद्गुरुदेव की शरणागत होकर, **साधक** बनकर साधना करनी होती है। **साधक** वही है जो अपने सद्गुरुदेव के श्रीमुख से उच्चरित दिव्य वचनों को अपने **हृदय कंवल** में धारण कर, निष्कपट भाव से श्रद्धापूर्वक, उनके बताए पथानुसार आराधना करता है।

मनुष्य एक संक्रमणकालीन, विकसनशील प्राणी है। मनुष्य के पूर्ण विकास के लिए हिन्दू (सनातन) धर्म में दस अवतारों की अवधारणा है। प्रत्येक अवतार ने मनुष्य की पूर्णता के लिए हर युग में उसको सत्य का पथ बताकर, उसके विकास सोपान में सीढ़ी पथ जोड़ा है। मनुष्य के कल्याण के लिए अवतार मनुष्य का चोला पहनकर, उसके समस्त दुःख-दर्दों को ओढकर, धरती पर अवतरित होता है। अवतार के श्रीवचनों को समझने के लिए भी निष्कपट भाव से करूण प्रार्थना करनी पड़ती है तभी समझ में आता है। यदि जैसा कहें वैसा ही अर्थ और भाव होता तो अर्जुन को समझाने के लिए श्रीकृष्ण को अठारह अध्यायों का उपदेश नहीं देना पड़ता। अर्जुन उनकी थोड़ी सी बात से ही समझ जाता।

श्री कृष्ण ने गीता के दसवें अध्याय तक मौखिक रूप से अर्जुन को समझाने का प्रयास किया लेकिन अर्जुन कोई भी बात मानने के लिए तैयार नहीं हुआ तो भगवान् श्री कृष्ण ने अपना विराट स्वरूप दिखाया, दिव्य सूक्ष्म चक्षुओं से तो उनको सब कुछ समझ में आ गया तथा यह भ्रम भी दूर हो गया कि ये कोई साधारण मनुष्य नहीं, और न ही ये मेरा रिश्तेदार है, ये तो जगत् स्रष्टा है।

साधक को अपने-आपको साधने के लिए सद्गुरु आज्ञा का संपूर्ण समर्पण और निष्ठापूर्वक पालन करना होगा तभी योग की सिद्धि संभव है। समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग ने बिना कोई अवगुण देखे, मनुष्य मात्र को संजीवनी चेतन मंत्र की दीक्षा दी है। **अब आराधना करना साधक का काम है।**

साधक-जो सद्गुरुदेव द्वारा बताई गई आराधना को करता है। जो **सद्गुरु आज्ञा का अक्षरशः पालन करता है।** निष्कपट, नम्रतापूर्वक अपनी बात को कहने वाला-साधक, केवल और केवल 'सत्य' की साधना करें।

हर बात की आलोचना, विरोध और उग्र स्वभाव साधक की गिरावट के लक्षण हैं। दूसरों की आलोचना में कई बार वह इतना पथभ्रष्ट हो जाता है कि स्वयं का अस्तित्व ही खो देता है।

इसलिए साधक को चाहिए कि वह अपनी आराधना कर, अपने जीवन में वो परिवर्तन लायें जिससे दुनिया आपसे प्रेरणा ले सकें। यदि हमारे जीवन में कोई परिवर्तन नहीं आया तो हमारे उपदेशों को कोई नहीं मानेगा।

सद्गुरुदेव हृदय से तभी प्रसन्न होते हैं जब शिष्य आराधना में आगे बढ़ता है। इसलिए जो भी साधक समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग को अपना सद्गुरुदेव मानता है, वह उनके द्वारा बताई गई आराधना के अनुसार संजीवनी मंत्र का सघन जप व नियमित ध्यान कर, अपना सर्वोत्तम विकास करें।

-साधक

❖❖❖

गतांक से आगे....

अनुभव-प्रधान युग का आगमन

अतः, व्यक्ति का तथा संसार का, जिसका व्यक्ति सदस्य है, सत्य एवं विधान खोज निकालने के लिये, यह व्यक्तिप्रधान युग मानवजाति का मौलिक प्रयास है। परम सत्य को खोज निकालने के लिए, आत्मा को सत्य से साक्षात्कार करने के लिए जिस अनुभूति और जीवन के अनुभव की जरूरत है, उस अनुभव की शुरूआत हो चुकी है। आगामी मानव जाति दिव्य जीवन धारण करेगी, उस विषय पर श्री अरविन्द ने सविस्तार वर्णन किया है कि आत्मा के पोषण के लिए एक अनुभव प्रधान युग का आगमन हो रहा है जिसमें मनुष्य पूर्णता प्राप्त करेगा।

जीवन के व्यवहार-क्षेत्र में कुछ ऐसी उन्नत एवं प्रकृतिशील प्रवृत्तियाँ पहले से ही उत्पन्न हो गयी हैं जो इस गंभीरतर अनुभववाद से प्रेरणा प्राप्त करती हैं। निःसंदेह स्थायी रूप में अभी कुछ भी संसिद्ध नहीं हो पाया है; सब कुछ अभी परीक्षणात्मक आरंभ के रूप में ही है; इस नवीन भाव को मूर्त रूप देने की ओर यह सब कुछ अभी तो प्रारंभिक टटोलना ही है।

संसार की मुख्य कार्य-प्रवृत्तियों की ओर अभी पिछले दिनों की महान् घटनाएँ-यथा यूरोप में राष्ट्रों की आपसी भीषण टक्कर और इससे पहले एवं बाद में उनके अपने अंदर की उथल-पुथल और परिवर्तन-पश्चिम की पुरानी बुद्धिवादी एवं जड़वादी प्रवृत्तियों तथा नवीन परंतु अभी तक केवल बहिरंग रूप में ही अनुभवात्मक तथा प्राणवादी प्रवृत्तियों के बीच समझोते के अव्यवस्थित अधूरे संघर्ष एवं अधूरे प्रयत्न का ही परिणाम थीं।

इन अनुभवात्मक तथा प्राणवादी प्रवृत्तियों को जो आत्मा की सच्ची अंतर्वृद्धि से ज्योतित नहीं थी। अनिवार्य रूप में भौतिक एवं बौद्धिक प्रवृत्तियों को अधिकृत करने एवं उन्हें जीवन के प्रति उनकी उच्छृंखल माँग की तृप्ति के लिये उपयोग में लाने को बाध्य होना पड़ा। संसार जीवनेच्छा और अधिकारेच्छा के भयंकर रूप से परिपूर्ण संगठन की ओर अग्रसर हो रहा था और यही वह प्रवृत्ति थी जो युद्ध की टक्कर के रूप में प्रकट हुई; इसने अपने लिये जीवन के नवीन रूप, जो इसके मुख्य भाव एवं लक्ष्य को अधिक भली प्रकार से अभिव्यक्त करते हैं, या तो खोल लिये हैं या उन्हें खोज रहा है।

झूठे ज्ञान से युक्त इस प्राणमय चालक शक्ति का दासत्वपूर्ण बुद्धि की महान् शक्ति तथा यंत्र रूप में उसके वशवर्ती तर्करूप साधन के साथ पक्का गठबंधन हो जाने के कारण ही पिछले **विश्वसंघर्ष** ने आसुरी, यहाँ तक कि राक्षसी रूप धारण कर लिया था और एक सिद्ध जड़वादी विज्ञान की प्रतिभा ने उसके दानव का काम किया, जो उसके विशाल, अति स्थूल, एवं निर्जीव चमत्कारों का दानवी कर्ता था।

इस प्रकार से उत्पन्न विस्फोटक शक्ति का विस्फोट था युद्ध और यद्यपि इसके कारण संसार खंडहरों से आकीर्ण हो गया तथापि युद्धोत्तर परिणामों ने जहाँ एक ओर विघटनकारी गड़बड़ अथवा कम-से- कम एक मर्मभेदी अव्यवस्था को असंदिग्ध रूप में जन्म दिया वहाँ इस विस्फोट को उत्पन्न करनेवाले भयंकर गठबंधन के अंत के लिये भूमि भी अवश्य तैयार कर दी, और इस लाभप्रद विनाश के द्वारा वे अब मानव-जीवन के क्षेत्र से उन मुख्य-मुख्य बाधाओं को भी दूर कर रहे हैं जो उच्चतर लक्ष्य की ओर उसके अधिक सच्चे विकास के मार्ग में बाधक हैं।

इस सबके पीछे मानवजाति की आशा, अब उन आरंभिक एवं अभी तक गौण प्रवृत्तियों पर लगी हुई है जिनमें मनुष्य के अपनी सत्ता के प्रति, अपने साथी मनुष्यों के प्रति और अपने व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन की व्यवस्था के प्रति एक नवीन अनुभव-प्रधान एवं आंतरात्मिक व्यवहार के बीज विद्यमान हैं।

युद्ध से पूर्व के युग में बच्चे के शिक्षण और पालनसंबंधी जो नवीन विचार प्रबल रूप से प्रचलित थे उनमें इन प्रवृत्तियों का विशेष प्रभाव दिखायी देता है। पहले शिक्षा बच्चे की प्रकृति को शिक्षण एवं ज्ञान के मनमाने ढांचे में बलात् यंत्रवत् ढालनामात्र थी जिसमें बच्चे की व्यक्तिगत आंतरिक प्रवृत्तियों पर सबसे कम ध्यान दिया जाता था और परिवार में उसके पालन-पोषण का अर्थ उसकी आदतों, उसके विचारों तथा उसके चरित्र की स्वभावगत प्रवृत्तियों को निरंतर दबाना तथा उन्हें परंपरागत धारणाओं अथवा शिक्षकों एवं माता-पिता के वैयक्तिक हितों एवं आदर्शों के अनुसार पूर्व-निश्चित ढांचों में अनिवार्य रूप से ढालना था।

संदर्भ-श्री अरविन्द
'मानव-चक्र' पुस्तक से

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

चित्त सदा प्रसन्न और शांत हो

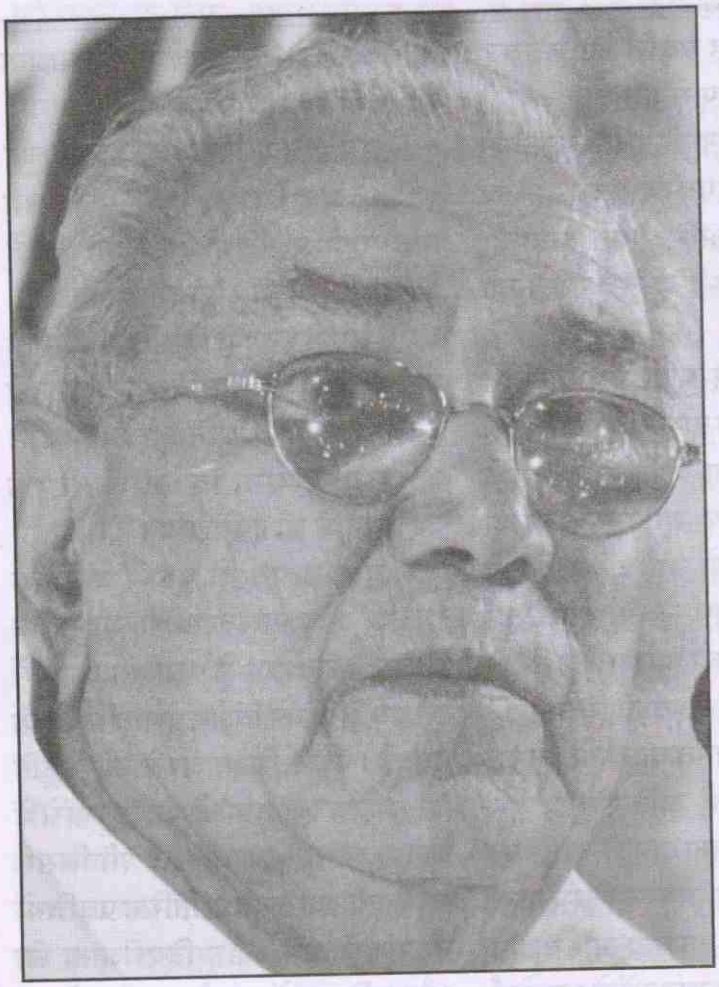

दुर्बलों को ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती। अतः दुर्बल कदापि न बनो। तुम्हारे अन्दर असीम शक्ति है, तुम्हें शक्तिशाली बनना चाहिए। अन्यथा तुम किसी भी वस्तु पर विजय कैसे प्राप्त करोगे? पर साथ ही अतिशय हर्ष अर्थात् हर्षोद्रेक से भी बचते रहो। अत्यंत हर्ष की अवस्था में भी मन शांत नहीं रह पाता, मन में चंचलता आ जाती है।

अति हर्ष के बाद सदा दुःख ही आता है। हँसी और आँसू का घनिष्ठ संबंध है। मनुष्य बहुधा एक अतिरेक से दूसरे अतिरेक की ओर दौड़ पड़ता है। चित्त सदा प्रसन्न रहे, पर शांत रहो। उसे अतिशयता की ओर कदापि भागने नहीं देना चाहिए। क्योंकि प्रत्येक अतिशयता का परिणाम उलटा होता है। अतः हर मानव प्राणी को "मध्यम मार्ग" पर चलना चाहिए।

–स्वामी विवेकानन्द

संदर्भ–सिद्धयोग पृष्ठ–55

मुख्यालयः– अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)–342001
संपर्क–0291–2753699, मो. 09784742595
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

सद्गुरुदेव के दिव्य शब्द

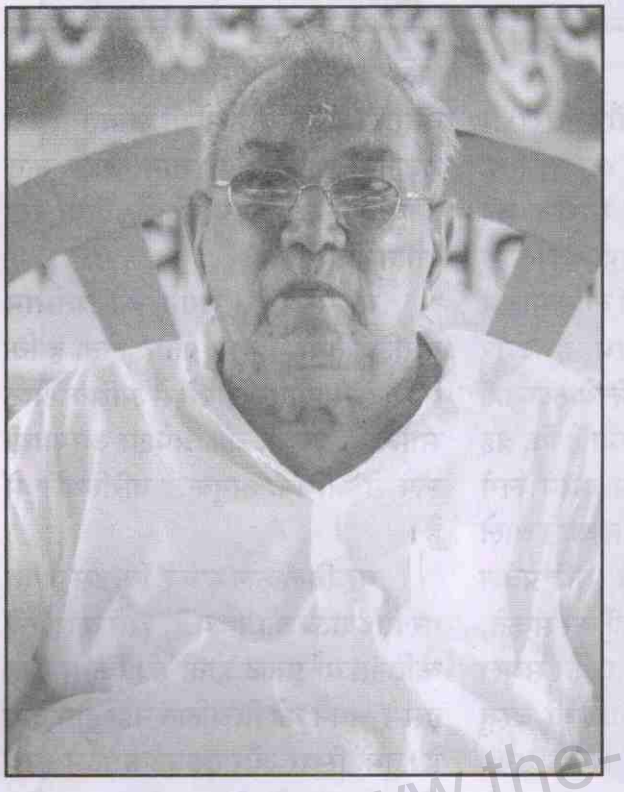

''अतः मेरी यह मान्यता है कि जब संसार के लाखों युवा अपनी आंतरिक चेतना की अभिवृद्धि करके भौतिक विज्ञान पर शोध कार्य करेंगे तो भौतिक विज्ञान की असंख्य समस्याएँ सुलझ जायेगी। मैं सामूहिक दीक्षा देता हूँ। अतः उस परमसत्ता के लिए एक लाख लोगों को चेतन करने के लिए एक क्षण के समय की भी आवश्यकता नहीं।

अगर मेरे सामने एक लाख लोग दीक्षा लेने बैठे हैं तो उनमें से सभी सकारात्मक लोग एक साथ चेतन हो जाएंगे, चाहे उनकी संख्या कितनी ही अधिक क्यों न हो? सामूहिक शक्तिपात दीक्षा बिना, विश्वशांति असंभव है।''

-समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

"The End Which Ever Begins Again"

वैदिक ऋषियों की सिद्धि अब एक सामूहिक सिद्धि बन गई है, और अतिमानस पार्थिव चेतना में प्रवेश कर गया है, वह जड़तत्व के सीमान्त पर भौतिक अवचेतन के अन्दर तक उतर आया है। सम्मिलन के लिए अब केवल एक सेतु पार करना शेष है। श्री माँ ने कहा है:

"एक नूतन जगत ने जन्म लिया है। इस समय हम संक्रमण काल के ठीक मध्य में हैं, जहाँ दोनों का मिश्रण हो गया है। पुरातन जगत अभी अपने पूरे बल में जमा हुआ है, और सामान्य चेतना पर उसीका अधिकार बना हुआ है, जबकि नूतन जगत दबे-छिपे, अभी भी बहुत सकुचाता हुआ सा, अभी चुपचाप प्रवेश कर रहा है, यहाँ तक कि बाहर कोई कहने योग्य परिवर्तन, वह इस समय तक नहीं ला रहा...; तो भी वह अपना कार्य किये जा रहा है, बढ़ रहा है, जब तक कि एक दिन इतना सशक्त हो जाये कि प्रत्यक्षतः अपना प्रभाव जमा सके।

पाँडिचेरी, 14 अप्रैल 1963

विरोधी शक्तियों का प्रतिरोध

यह सर्व विदित है कि विरोधी आसुरिक शक्तियाँ निम्नतर प्रकृति की क्रियाओं का लाभ उठाती हैं और उनके द्वारा सिद्धि को बिगाड़ने, नष्टभ्रष्ट करने या उसमें विलम्ब कराने की चेष्टा करती हैं।

विरोधी शक्तियों ने अपने लिये स्वयं एक कार्य निर्धारित कर रखा है। --यह कार्य है व्यक्ति की, कार्य की और स्वयं पृथ्वी की अवस्था की परीक्षा करना और यह जाँच करके देखना कि ये आध्यात्मिक शक्ति के अवतरण तथा सिद्धि के लिये कहाँ तक तैयार हुए हैं?

ये शक्तियाँ हमारे रास्ते में पग-पग पर बड़ी प्रचंडता के साथ आक्रमण करती हुई, **छिद्रान्वेषण** करती हुई, उलटी बातें सुझाती हुई, निराशा उत्पन्न करती हुई या विद्रोह के लिये उकसाती हुई, अविश्वास पैदा करती हुई, कठिनाइयों का ढेर लगाती हुई विद्यमान रहती हैं।

इसमें सन्देह नहीं कि इस कार्य ने उन्हें जो अधिकार दे रखा है उसका ये अत्यन्त अतिरंजित अर्थ लगाती हैं और हमें जो चीज एक राई के बराबर दिखायी देती है उसे ही ये पर्वत बना देती हैं। जरासा भी कहीं गलत कदम उठाया अथवा कोई भूल की कि ये रास्ते पर आ खड़ी होती हैं और रास्ता बन्द करने के लिये मानो समूचे हिमालय को लाकर खड़ा कर देती हैं।

परन्तु पुरातन काल से इन शक्तियों को जो इस प्रकार प्रतिकूलता उत्पन्न करने दी जाती है, इसका उद्देश्य केवल यह नहीं है कि इसके द्वारा हमारी जाँच या अग्निपरीक्षा की जाय बल्कि यह है कि यह हमें एक महत्तर शक्ति, पूर्णतर आत्मज्ञान, तीव्रतर पवित्रता और अभीप्सा की शक्ति तथा किसी चीज से नष्ट न होने वाला विश्वास प्राप्त करने एवं भगवत् कृपा का अधिक शक्तिशाली अवतरण कराने का प्रयास, करने के लिये बाध्य करे।

जहाँ तक जगत् और विरोधी शक्तियों के साथ सम्पर्क का प्रश्न है, निःसन्देह यह हमेशा ही साधक की अन्यतम मुख्य कठिनाई रही है, किन्तु जगत् और विरोधी शक्तियों का रूपान्तर करना बहुत भारी काम है और व्यक्तिगत रूपान्तर इसके लिये रुक नहीं सकता। व्यक्ति को यह करना है कि वह उच्चतर शक्ति में निवास करने लगे जिसमें ये चीजें, ये विचलित करने वाले तत्त्व प्रवेश नहीं कर सकते, यदि प्रवेश करें भी तो उसे विचलित नहीं कर सकते, और उससे इतना परिशोधित और सबल बन जाये कि वह किसी विरोधी वस्तु को कोई जवाब ही न दे।

यदि व्यक्ति के पास रक्षा करने वाला आवरण हो, उसमें आन्तरिक शोधन करने वाला अवतरण हुआ हो और, उसके परिणाम स्वरूप उसकी अन्तर सत्ता में उच्चतर चेतना प्रतिष्ठित हो गई हो तथा अन्त में वह अत्यधिक बाह्य सतह पर सक्रिय रहने वाले भागों में भी पुरानी अज्ञानमयी चेतना का स्थान ले ले तो जगत् और विरोधी शक्तियों का फिर कोई प्रभाव नहीं रहेगा -- कम-से-कम व्यक्ति की अपनी अन्तरात्मा के लिये क्योंकि एक और भी बृहत्तर कार्य है जो व्यक्तिगत नहीं है तथा जिसमें उसे निश्चय ही उनके साथ निबटना पड़ेगा परन्तु वर्तमान भूमिका में वह व्यक्ति का मुख्य व्यापार नहीं होना चाहिये।

निम्न प्रकृति की शक्तियों पर बदल जाने के लिये हमेशा ही एक दबाव रहता है-निम्न प्रकृति के द्वारा ही विरोधी शक्तियाँ भी इस दबाव का अनुभव करती हैं, किन्तु विरोधी शक्तियों का बदलना या नष्ट हो जाना बहुत कुछ उनके अपने चुनाव पर ही छोड़ दिया गया प्रतीत होता है।

यह सच है। जगत् की वर्तमान परिस्थितियों में ऐसा प्रतीत होता है कि प्राणिक मिथ्यात्व अपने से अधिक श्रेष्ठ सात्विक प्रकृति की अपेक्षा अस्थायी रूप से अधिक अनुकूल परिस्थिति में है।

यह बिलकुल सच है कि इस जगत् पर मिथ्यात्व का राज्य है, इसी कारण ये कठिनाइयाँ प्रकट होती हैं। किन्तु तुम्हें इससे अपने को विचलित नहीं होने देना है। तुम्हें स्थिर और दृढ़ रहकर उस सत्य के बल का और दिव्य शक्ति का प्रयोग करते हुए सीधा आगे बढ़ना होगा, जो तुम्हें कठिनाइयों पर विजय पाने में सहारा देती है और उस वस्तु को सीधा सरल बनाती है जिसे मिथ्यात्व ने कुटिल बना रखा है।

मैं ऐसा ही मानता हूँ। जब कोई कार्य करना होता है तो वहाँ सदा ही कुछ शक्तियाँ होती हैं जो उसमें हस्तक्षेप करना चाहती हैं। मैं समझता हूँ, वे यह दर्शाना चाहती है कि निर्विघ्न रूप से चलना और विशाल अप्रतिहत और निष्कण्टक मार्ग केवल वेद की **ऋतम् सत्यम्** बृहत् की भूमिका से ही सम्बद्ध है और यदि शक्ति हो तो हमें उस भूमिका में ऊपर उठना चाहिये।

संदर्भ-अरविन्द के पत्र भाग-3

क्रमशः अगले अंक में...

सघन आराधना

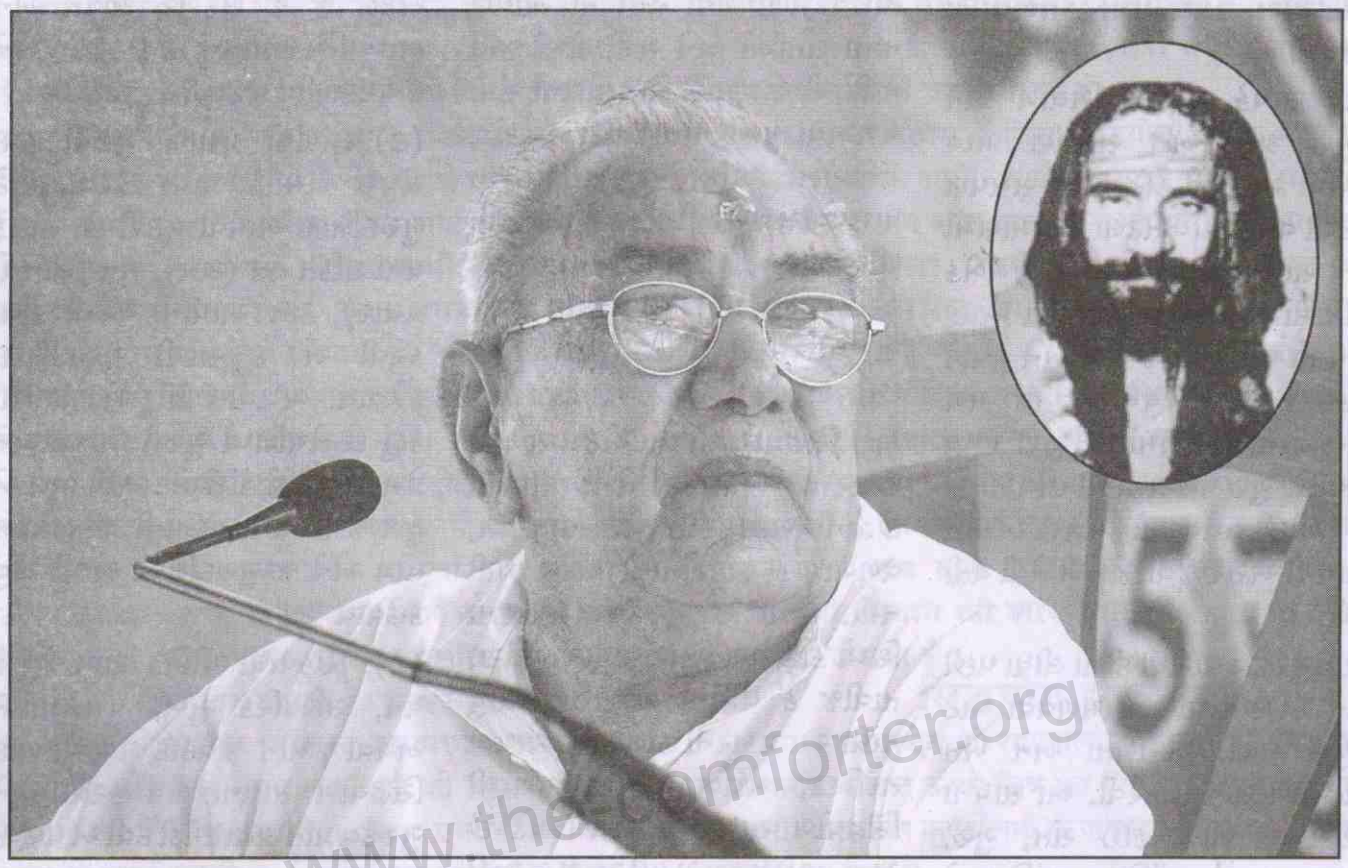

गुरु से दीक्षा लेने के पश्चात् **सत्यान्वेषी साधक** के लिए आवश्यकता पड़ती है **अभ्यास** की। गुरुपदिष्ट साधनों के सहारे इष्ट के निरन्तर ध्यान द्वारा सत्य को कार्यरूप में परिणत करने के सच्चे और बारम्बार प्रयास को अभ्यास कहते हैं। मनुष्य ईश्वर-प्राप्ति के लिए चाहे कितना ही व्याकुल क्यों न हो, चाहे कितना ही अच्छा गुरु क्यों न मिले, साधना-अभ्यास, बिना किये उसे कभी **ईश्वरोपलब्धि** न होगी। जिस समय अभ्यास दृढ़ हो जाएगा, उसी समय ईश्वर प्रत्यक्ष होगा।

इसलिए कहता हूँ कि हे हिन्दुओं, हे आर्य सन्तानों, तुम लोग हमारे धर्म के हिन्दुओं के इस महान् आदर्श को कभी न भूलो। हिन्दुओं का प्रधान लक्ष्य इस **भवसागर** के पार जाना है-केवल इसी संसार को छोड़ना होगा, ऐसा नहीं है, अपितु स्वर्ग को भी छोड़ना पड़ेगा-अशुभ के ही छोड़ने से काम नहीं चलेगा, **शुभ का भी त्याग** आवश्यक है; और इसी प्रकार **सृष्टि-संसार**, बुरा-भला इन सबके अतीत होना होगा और अन्ततोगत्वा **सच्चिदानंद ब्रह्म** का **साक्षात्कार** करना होगा।

-स्वामी विवेकानंद साहित्य वॉल्यूम -5, पृष्ठ-342

અદ્ભૂત સિદ્ધયોગ

સિદ્ધયોગ સાધનામાં પાળવાના નિયમો

(૧) સાધકે ગુરુદેવ સિયાગ પ્રતિ સંપુર્ણ શ્રદ્ધા અને સમર્પણ ભાવ રાખવો સાધકની શ્રદ્ધા અને સમર્પણ જેટલી વધારે હોય તેટલા જ પ્રમાણમાં એને સાધના સફળ થાય છે. જેમબેંક ખાતામાં જીક્ટદ્દેહપ્ર નું રોકાણ ઓછું હોય તો ઓછું વ્યાજ મળે અને વધારે રોકાણ હોય તો વધારે વ્યાજ મળે તેમશ્રદ્ધાના પ્રમાણમાં તેનું ફળ પ્રાપ્ત થાય છે. ગુરુ પર શ્રદ્ધા ના હોય તો કા તો ઓછી હોય તો મંત્રજાપ અને ધ્યાનની અસર જેવી જોઈએ તેવી થતી નથી.

(૨).ગુરુદેવ પાસેથી દીક્ષા લીધા પછી એનું ઈચ્છિત પરિણામમેળવવા માટે સંપુર્ણ શ્રદ્ધા, એકાગ્રતા અને ખંત સિદ્ધયોગ સાધના કરવી. આ સાધના દરમિયાન બીજા કોઈ સંત, ગુરુ, બાબા, ભુવા, તાંત્રિક, માંત્રિક કે ફકીરની પાછળ જવું નહી. પોતે સ્વીકારેલ ગુરુ પર અડીખમરહેવું અને તેની જ આરાધના કરવી. અલગ અલગ ગુરુઓ પાછળ પડવાથી શ્રદ્ધા વહેંચાઈ જાય છે. પરિણામે સાધકના હાથમાં કંઈ જ આવતું નથી. દા.ત. એક ડૉકટરનો અલાજ ચાલતો હોય ત્યારે આપણે બીજા ડૉકટરનો ઈલાજ કરતા નથી. કારણ બંનેની દવા અને ટ્રીટમેન્ટ મીક્ષ થાય તો બીમારી દુર થવાને બદલે વધુ વણસી જવાની શકયતા છે. એટલે એક જ ગુરુ પર શ્રદ્ધા રાખીને સાધના કરવી.

(૩).સિદ્ધયોગ સાધના એ ઈશ્વર પ્રાપ્તિનો સર્વોત્તમમાર્ગ છે. કારણ કે જે બ્રહ્માંડમાં જે તેત્રીસ કરોડ દેવી - દેવતા પૂજાય છે એવા દેવોના દેવ મહાશિવ પાસે સિદ્ધયોગ નો ર્સતો જાય છે. જેમઆપણને ઝડપી પ્રવાસ માટે હાઈવે મળી ગયો હોય તો આપણે નાના ર્સતાઓ અને ગલીઓમાં જતાં નથી. એ જ પ્રમાણે સિદ્ધયોગનો ર્સતો મળઅયા પછી નાના મોટા કર્મકાંડ, મંદિરોના આંટાફેરા અને યાત્રા ધામપ્રવાસ વગેરેની જરૂર રહેતી નથી. બીજા ગુરુઓ કે સંતો અને કર્મકાંડ કરતા લોકો પ્રતિ આદરભાવ જરૂર રાખવો પરંતુ સિદ્ધયોગનો માર્ગ છોડવો નહી.

(૪).સિદ્ધયોગ સાધના એટલે સાક્ષાત ઈશ્વરના અલૌકિક તેની સાધના છે.તેની સામે કોઈ પણ ભૂત-પ્રેત, વળગાડ કે જાદુટોનાની અસર થતી નથી. એથી જ ગુરુદેવ સિયાગના શિષ્યે કોઈ પણ પ્રકારના ધાગા, દોરા, તાવીજ કે યંત્રોના બંધનમાં ફસાવું નહી. આ પ્રકારની કાલા જાદુ અથવા તાંત્રિક, માંત્રિક પાસે જવાથી સિદ્ધયોગ સાધનામાં ખલેલ પડે છે અને સાધક ગંભીર પ્રકારની મુશ્કેલીનો સામનો કરવો પડે છે.

(૫).સિદ્ધયોગ સાધના કરતી વખતે કોઈ બીમારીના કારણે ડૉકટર કે વૈધની દવા લેવી પડે તો જરૂર લેવી. પરંતુ દવાને વળગીના રહેવું. સાધક જેટલી શ્રદ્ધાથી ગુરુદેવને રોગમુક્તિ માટે પ્રાર્થના કરશે એટલા જ ઝડપથી એની બીમારી દવા લીધા વગર મટી ગયાનો અનુભવ તેને થશે. ડૉકટરોએ જે દર્દીઓને જીવતા રહેવાની આશા છોડી દે દીધી હોય આવા અસંખ્ય દર્દીઓ ગુરુદેવ સિયાગના શરણે આવ્યા પછી મૃત્યુના કાંઠેથી પાછા ફરી અને સાજા થઈને નોર્મલ જીવન જીવી રહ્યા છે.

(૬).ભારતીય ધર્મશાસ્ત્રના અનુસાર મનુષ્યના આત્મિક ઉધ્ધાર કરવાની જવાબદારી ઈશ્વરે જેના વાણીમાં સત્યતા હોય એવી ગુરુને સોંપી છે. એટલે જ જે સદ્દગુરુ જીવન અને આધ્યાત્મિક જ્ઞાનનું દાન કરે છે એને ઈશ્વર ગણીને પૂજવું.

(૭).ધર્મગ્રંથો પ્રમાણે ગુરુની કૃપા સંપુર્ણ પ્રમાણે પ્રાપ્ત કરવા માટે ગુરુદક્ષિણા આપવી જરૂરી છે. સાધકે યથા શક્તિ તન (શ્રમ), મન (જ્ઞાનનો પ્રચાર), ધન આપીને ગુરુની સેવા કરવી એ જ સાચી ગુરુદક્ષિણા કહેવાય. ભગવાન શ્રીકૃષ્ણે ગીતામાં કહ્યું છે તેમશિષ્ય ગુરુને આદર અને પ્રેમભાવથી જે કાંઈ ભેટ આપે ભલે એ ફુલ જેવી નાનામાં નાની વસ્તુ કેમન હોય એને જ ગુરુદક્ષિણા આપી એવું કહેવાય.

(૮).ગુરુકૃપાથી ભૌતિક લાભ જેવું કે ધન, સાંસારિક સુખ, પુત્ર પ્રાપ્તિ અથવા જમીન જાયદાદ મેળવ્યા બાદ સિદ્ધયોગ સાધના બંધ કરવી અને ગુરુદેવ પ્રતિ શ્રદ્ધા છોડી દેવી એ ઘણું જ અયોગ્ય કહેવાય.

આવું કરવાથી સાધકને મળેલ લાભ લાંબા સમય સુધી ટકતો નથી અને તે સંસારની અનેક મુશ્કેલીઓ પાછો ધકેલાય જાય છે. એટલે જ લાભ મેળવ્યા પછી પણ ગુરુદેવ ઉપર જીવનભર શ્રદ્ધા રાખવી જરૂરી છે.

સિદ્ધયોગ આરાધનામાં આડંબરની જરૂર નથી :

ગુરુદેવ સિયાગે બતાવેલી આરાધના ના વિશિષ્ટતા એ છે કે એમાં કોઈપણ જાતના આડંબરને સ્થાન નથી. આમાં વિશિષ્ટ પ્રકારના કપડા, ખાનપાન કે આસનની જરૂર હોતી નથી. સાધકને જે પહેરાવ ઠીક લાગે તે અને જે જગ્યા અનુકૂળ હોય તે જગ્યાએ સાધક ધ્યાન કરી શકે છે. પછી એ રૂમમાં હોય કે બહાર ખુલ્લામાં બેઠો હોય. ગુરુદેવના ઘણા શિષ્યો પ્રવાસ કરતી વખતે

www.the-comforter.org

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा व कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला **सहस्रार** में स्थित है और उसकी **शक्ति मूलाधार** में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है। उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके चेतन होकर **उर्ध्वगमन** करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही **'मोक्ष'** है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, **एक मृगमरीचिका** ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है। उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण **प्रभुत्व** होता है। इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित **परमसत्ता** की **पराशक्ति** है। अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित **उस परम तत्त्व** की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, **एक समय** में, मात्र **एक ही व्यक्ति** के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह **सार्वभौम सत्ता** है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

यह भारतीय दर्शन की विश्व को **अभूतपूर्व** एवं **अद्वितीय** देन है। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी परम श्रद्धेय समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार इस **दिव्य ज्ञान** का **महाप्रसाद** बाँटने, विश्व में **अकेले** ही निकल पड़े हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो **उर्ध्वगमन** करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसेः- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की। वह शक्ति सीधा अपने नियंत्रण में सभी क्रियाएँ स्वयं करवाती है।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् पर शिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी **श्री मत्स्येन्द्र नाथ** जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों-**आदि भौतिक, आदि दैहिक व आदि दैविक (Physical, Mental & Spiritual)** का शमन (**नाश**) करता है।

इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व वैज्ञानिक समस्या नहीं है; जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो **अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है जो सदगुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।**

सिद्धयोग से लाभ

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं नाम जप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

- सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसेः-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसेः-तनाव, पागलपन, उन्माद, फोबिया (भय), चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के नशों जैसेः- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।
- विद्यार्थियों की **एकाग्रता** एवं **याद्दाश्त** में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।
- आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।
- गृहस्थ जीवन में रहते हुए **'भोग एवं मोक्ष'** दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।
- वैदिक दर्शन द्वारा ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एंव साक्षात्कार।

❖❖❖

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

उद्देश्य

- समस्त विश्व के मानवों के कल्याण हेतु बिना किसी वर्ग, वर्ण, जाति, धर्म, राष्ट्रीयता एवं लिंग भेद के इस दिव्य अध्यात्म ज्ञान का प्रचार एवं प्रसार करना एवं समस्त विश्व में अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र स्थापित करना।
- विश्व के समस्त धर्मों के विकारों एवं आडम्बरों से मानव मात्र को मुक्त करना एवं अध्यात्म के मूलभूत सार्वभौम सिद्धांत के अनुसार मन मंदिर में उस परमतत्त्व की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार कराना।
- विश्व भर में वैदिक दर्शन की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार करवाकर भौतिक जगत् में विज्ञान की तरह उसे सत्य प्रमाणित करना।
- विश्व कल्याण हेतु संपूर्ण विश्व में वैदिक मनोविज्ञान (अध्यात्म विज्ञान) की शिक्षा हेतु प्रबन्ध करना तथा वहीं के लोगों को इस ज्ञान का प्रशिक्षण देने योग्य बनाना।
- विश्व के सकारात्मक स्त्री-पुरुषों को शक्तिपात-दीक्षा देकर चेतन करना तथा उन्हें अपने ही देश में इस ज्ञान के प्रचार-प्रसार का अधिकार देकर मानव शान्ति का पथ प्रशस्त करना।
- सिद्धयोग में वर्णित शक्तिपात दीक्षा द्वारा मानवीय गुणों में परिवर्तन लाया जाकर तमोगुण से रजोगुण, रजोगुण से सतोगुण, सतोगुण से त्रिगुणातीत जाति में बदलकर, उस परम तत्त्व की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार कराना।

www.the-comforter.org

गुरु पूर्णिमा महोत्सव

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

के संस्थापक व संरक्षक

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

की असीम कृपा से

गुरु-शिष्य मिलन का पावन पर्व 'गुरु पूर्णिमा महोत्सव' जोधपुर आश्रम में

शुक्रवार, दिनांक-27 जुलाई 2018 सुबह-10:30 बजे श्रद्धा समर्पण से मनाया जाएगा।

इस पावन पर्व पर समस्त साधक गण सादर आमंत्रित हैं

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342003

संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595

Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

से शिष्य को शक्तिप्राप्त हो जाती है। जिसके हृदय में गुरु के प्रति उच्च श्रद्धा और प्रेम हो उसे गुरु की शक्ति सहज ही प्राप्त हो जाती है।

श्री रामकृष्ण परमहंस के एक स्पर्श मात्र से स्वामी विवेकानन्द को तत्काल दिव्यता की अनुभूति हो गई थी। गुरु हमारी माया को जड़ से उखाड़ कर, हमें आत्म स्वरूप की एक झलक दिखाते हैं। तथा हमारे सच्चे स्वरूप का सतत् बोध कराते हैं।

कलियुग के गुणधर्म के कारण ऐसे गुरुओं का अभाव हो गया, जो परमतत्त्व की प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार करवा सके। हमारे संतों की वाणियाँ स्पष्ट कहती हैं कि समर्थ गुरु के लिए यह कार्य कठिन नहीं है। गुरु-परम्परा कभी खण्डित नहीं होती है, इस संबंध में नाथयोगी गोरखनाथजीने कहा है-

'प्रथमे प्रणऊ गुरु के पाया,
जिन मोहि आत्म ब्रह्म लखाया।
सतगुरु सबद् कह्या ते बुझ्या,
तृहूँ लोक दीपक मनि सूझ्या।।

संत कबीर दास जी महाराज ने भी कहा है-

1.तीन लोक नौ खण्ड में,
गुरु ते बड़ा न कोई।
करता करे न कर सकै,
गुरु करै सौ होई।।

2. सौ-सौ सूरज ऊगवें,
चंदा चढै हजार।
इतना चांदन होत भी,
गुरु बिन घोर अन्धार।।

3. गुरु कुम्हार शिष कुम्भ है,
गढि गढि काढै खोट।
अन्तर हाथ पचार कै,
बाहर मारे चोट।।

'गुरु', शिष्य के चंचल विक्षेपयुक्त मन को निश्चल, स्थिर करके उसको अंतर में शांति दिलाता है। गुरु से जो कोई भी व्यक्ति शक्तिप्राप्त करना चाहता है, गुरु उसको शक्तिप्रदान करते हैं। यदि कोई यह पूछे कि सूर्य किसको गर्मी देता है तो उत्तर है-जो उसके सामने आकर खड़ा होता है या जिनके घर का दरवाजा खुला है।

'सद्गुरु', शिष्य को महादुःखमय संसार सागर के पार सुरक्षित रूप से ले जाकर, परमानंद के तट पर पहुँचा देते हैं। गुरु, लक्षणातीत होते हैं। उनका शुद्ध लक्षण केवल एक है-'परमानन्द'। जिस प्रकार नदी, समुद्र में मिलकर समुद्र बन जाती है, उसी प्रकार शिष्य भी गुरु से भिन्न नहीं होता। अर्थात् निरन्तर आराधना कर परब्रह्म के स्वरूप में बदल जाता है। इसी संबंध में कबीरदासजी महाराज ने कहा है-

जल बिच कुम्भ,
कुम्भ बिच जल है,
बाहर-भीतर पानी।
विगटा कुम्भ,
जल-जल ही समाना,
ये गति विरले जानी।।

गुरु के अनुग्रह से कुण्डलिनी का कार्य पूर्ण होता है और वह 'सहस्रार' में पूर्ण रूप से लय हो जाती है, तब शिष्य स्वयं ईश्वर बन जाता है। हमारा इतिहास साक्षी है कि भगवान् श्रीराम और श्रीकृष्ण ने भी गुरु धारण किये थे। यद्यपि उनके गुरु अच्छी तरह जानते थे कि उनके शिष्य, कोई साधारण मनुष्य नहीं है, फिर भी उन्होंने उन्हें दीक्षा दी। भगवान् श्री राम और श्रीकृष्ण ने असीम श्रद्धा व समर्पण से अपने सद्गुरुओं की सेवा व पूजा अर्चना की थी। ऐसे ही सिद्ध सद्गुरुदेव परम दयालू श्री रामलालजी सियाग जिनको अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथाजी योगी (ब्रह्मलीन) जामसर से शक्तिपात दीक्षा की सामर्थ्य प्राप्त है, का प्रकटीकरण बीकानेर (पलाना) की धरती से हुआ है।

जिनकी अनुग्रह शक्ति से विश्व समुदाय आलोकित हो रहा है। सद्गुरुदेव की शक्तिपात-दीक्षा से प्रकट हुआ-सविता का दिव्य प्रकाश सम्पूर्ण विश्व के अन्धकार को मिटाकर मानवता में सुख-शांति और अमन चैन भर देगा। गुरुदेव की शक्तिपात दीक्षा से, मानव में सुषुप्त शक्ति कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है।

जाग्रत शक्ति विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ स्वतः करवाती हैं। स्वतः होने वाली यौगिक क्रियाओं से विभिन्न प्रकार के असाध्य रोग (कैंसर, एड्स) ठीक हो जाते हैं तथा नशे छूट जाते हैं तथा पूरा जीवन ही बदल जाता है।

सद्गुरुदेव सियाग की अपने परम सद्गुरुदेव के प्रति कितनी गाढी प्रीति थी, उनके उद्गार-**''जो कुछ हो रहा है, वह मेरे असंख्य गुरुओं की आराधना का फल है। मुझे मेरे परमदयालु संत सद्गुरुदेव की अहैतुकी कृपा के कारण यह सब अनायास ही प्राप्त हो गया।''**

जहाँ एक तरफ पूरा विश्व एड्स, कैंसर, हेपेटाईटिस-बी व अन्य अनेक रोगों से ग्रसित है, वहीं इनके फोटो पर ध्यान करने मात्र से रोगों से छुटकारा मिल रहा है। ऐसे परम दयालू सद्गुरु भगवान् को पहचानो और एक पल भी व्यर्थ में मत बिताओ। गंभीरता पूर्वक आराधना करो। ऐसे समर्थ सद्गुरुदेव को बारम्बार, अनंत बार प्रणाम, प्रार्थना, वन्दना।।

-सम्पादक

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है?

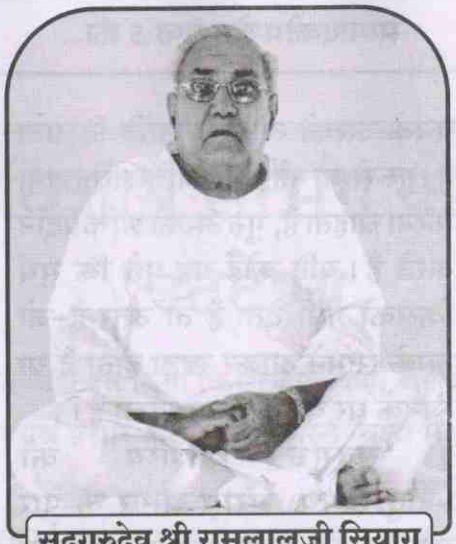

सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या?

ध्यान करके देखें।

▶ ध्यान की विधि ◀

गुरूदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें दो कार्य करने होते हैं। सघन नाम (मंत्र) जप व नियमित ध्यान।

आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से खुली आँखों से देखें। फिर आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं।) केन्द्रित कर, गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करुण प्रार्थना करें। अब गुरुदेव द्वारा दिये गए संजीवनी मंत्र का मानसिक रुप से सघन जाप करें। (बिना होंठ-जीभ हिलाए)। नाम जप ही ध्यान की चाबी (Key) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (Round the Clock) सघन मंत्र जप करें।

इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणयाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ध्यान अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी। इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रुप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।

▶ Method of Meditation ◀

Sit in a comfortable position. Look gurudev's picture for some time then close your eyes and try to imagine gurudev at place between your eyebrows (third eye) and request for 15 minutes of meditation. While thinking of gurudev's image, silently chant (without moving your lips or tongue) gurudev's mantra or any spiritual force (**Ram, Krishna, Jesus, Waheguru, Allah etc.**) which you believe in.

During meditation if you experience any kind of automatic movement then don't try to stop. The movements will stop automatically after 15 minutes.

www.the-comforter.org

शक्तिपात-दीक्षा

शक्तिपात दीक्षा एक महान् और दिव्य विज्ञान है जिसके द्वारा सिद्धगुरु अपनी दिव्य शक्ति को शिष्य में सीधे संप्रेषित कर, उसकी सुषुप्त शक्ति कुण्डलिनी को जाग्रत करते हैं।

गुरु शिष्य परम्परा में चार प्रकार से शक्तिपात दीक्षा का विधान है। स्पर्श द्वारा, दृष्टि द्वारा, संकल्प व शब्द (मंत्र) दीक्षा द्वारा।

- गुरुदेव का मंत्र चेतन (**Enlightened**) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।
- नाम जप ही चाबी (**Key**) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (**Round the Clock**) सघन जपो।

गुरुदेव की दिव्य आवाज में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें–07533006009

सभी जाति–धर्मों के जिज्ञासु स्त्री–पुरुषों को स्नेह निमंत्रण।

मुख्यालय : **अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र**

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342 003 सम्पर्क : 0291-2753699, 9784742595

Web : www.the-comforter.org

वाराणसी (यू.पी.) में ध्यान सिद्धयोग शिविर आयोजित। (14 से 18 जून तक)

फतेहगढ़ (जैसलमेर)-ग्रीष्मकालीन अवकाश में शिक्षक प्रशिक्षण शिविर में सिद्धयोग शिविर का आयोजन। (25 मई 2018)

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365 * POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2017 & VALID UP TO 31.12.2019
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

।। ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः ।।

www.the-comforter.org

सद्गुरुदेव की असीम कृपा

'सद्गुरु की दया के बिना विषय-त्याग दुर्लभ है, तत्त्वदर्शन दुर्लभ है और सहजावस्था दुर्लभ है'।।

मेरे संत सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन) की अहैतुकी कृपा मुझ पर नहीं होती तो मैं, सौ जन्म आराधना करके भी यह ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता था। अतः इसे गुरु प्रसाद समझकर बाँटने निकला हूँ।

विश्व के सभी सकारात्मक स्त्री-पुरूषों को सच्चाई जानने के लिए सप्रेम आमंत्रित करता हूँ।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें
Spiritual Science • स्पिरिचुअल साइंस
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी
पोस्ट बॉक्स नं.41, जोधपुर (राज.) 342003 फोन: 0291-2753699, मो. : 9784742595

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,
श्रीमान्

स्वत्वाधिकारी : अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए ताज प्रिण्टर्स, बोराणा हाऊस, जालोरी गेट के अन्दर, जोधपुर से केवल मुद्रित एवं अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित। सम्पादक - रामूराम चौधरी